ڈاکٹر

کیلاش ناتھ

کاٹجو

وہ گاندھی جی کی لیڈرشپ ہے، لیکن انہیں ان کے روز از جیون میں کن چیزوں سے رہنمائی اور روشنی ملتی تھی جنہوں نے ہمارے دیش واسیوں کے اندر آزادی کی تڑپ وطن کا درد اور دیش سیوا کا جذبہ پیدا کیا۔ جواب یہی ہے گیتا کرم کا گیت اور سندیش گاندھی جی کے نزدیک کس قدر اہمیت اور عظمت رکھتی تھی۔ انہوں نے کئی بار اپنی زندگی میں بتایا تھا جب کبھی وہ خود کو مشکل میں محسوس کرتے تھے وہ گیتا کی شرن لیتے تھے۔ گاندھی جی کے نظروں میں گیتا انسانی زندگی کے ہر شعبہ میں بہترین رہنما تھی۔

ہمار

گنگادھر دیہاتی

ہزاروں سال پہلے گوکل کی ہری بھری وادیوں میں بنسری کی آواز گونج اٹھی تھی۔ اور سارا سنسار مرتے مرتے جی اٹھا تھا۔ بے جان دھرتی نے سانس لی تھی ہواؤں میں کیف اور سرور بھر گیا تھا اور فضائیں گیتوں سے معمور ہو گئی تھیں زندگی نے امن اور سکون، عیش و راحت، سداچار اور راستی اور سچائی سے عہد پیمان باندھے تھے۔ صدیوں کی بے انت اور گہری تاریکی کو چیر ۔ ۔ ۔ ۔ ۔ در بج گوکل کی داسی ۔ ۔ ۔ آیا تھا اور اس نے سارے سنسار کو جگمگا دیا تھا۔

یہی وہ پہلی جنم اشٹمی تھی اور یہی جنم اشٹمی بار بار ہمیں تاب و تواں دیتی رہی اسی نے ہمارے ناتواں بازوؤں میں وہ قوت بھر دی کہ ہم نے ہر معرکے میں اپنی بہادری اپنی ثابت اور اپنی ۔ ۔ ۔ تمکنت کا سکہ بٹھا رہا ہم نے سداچار، سچائی اور نصائح ۔ ۔ ۔ ستارہ کے ہمیشہ کار دیئے ہم نے سیکڑوں مہابھارت لڑے اور ہر بار ظالم و درد جابر کو روند کر حاجت مندوں کو حق دلا دیا۔ ہم نے ہزاروں راونوں کو موت کی نیند سلا دیا، ہزاروں کسنوں کو اکھاڑ پھینکا اور ۔ ۔ ۔ ہر دے ٹیکا۔ گوکل کی وادی نے جو پہلا ازلی اور ابدی نغمہ سنا تھا وہ اپنے پر وبال پھیلا کر ساری دھرتی پر پھیل گیا وہ ساری کائنات کو رنگ دلنوازی میں نہا گیا۔ پر گوکل کی ہری بھری وادی کا پہلا نغمہ نہ تھا بلکہ فضاؤں کے کندھوں پر تیرتا ہوا سارے سنسار کا نغمہ بن گیا اور ہماری جنم بھومی۔ کشمیر بھی اس سے خالی نہیں رہی اور ہماری وادیاں ہمارے کہسار، ہمارے ندی نالے بھی ان نغموں سے بھرتے۔ یہی بھارت کا ہم نے صدیوں تک تہر اور جبر کے دلیو ۔ ۔ ۔ دور دراز رکھے اپنے اس نغمے کی لاج رکھی اس نغمے سے مسحور ہو کر ہم نے اسے جادو داد بنانے کے لئے اپنے سر جھکتے

کتراتے اپنے ہاتھ قلم کر ۔ ۔ ۔ اور برچھیاں تڑوائیں اور ۔ ۔ ۔ کے سامنے کٹتے دیکھا مگر ۔ ۔ ۔ بن جاتے یہ نغمہ گونجتا ۔ ۔ ۔ رہے بھرتا رہے اور ۔ ۔ ۔ زندگی ٹوٹ گئی ہماری امید ۔ ۔ ۔ برچھیاں کیتیں، ہمارے دلوں ۔ ۔ ۔ ریزہ ریزہ ہو گئے تو اس ۔ ۔ ۔ اسی نغمے نے ہمیں سرکھینا ۔ ۔ ۔ ولوان بنتا اس کے دامن ۔ ۔ ۔ ہوتے اس کی دستگیری طلب ۔ ۔ ۔ ہم نے اس سے جو کچھ بھی ۔ ۔ ۔ بھر دیا لیکن اب یہ نغمہ ۔ ۔ ۔ کی مرلی کی تان کہیں جا ۔ ۔ ۔

"شری کرشن"

تم یہ کہتے ہو کرشن دہرتی پہ آئیں ۔ ۔ ۔

شری کرشن بھارت میں جنم ۔ ۔ ۔

پہلے ویوکی سی ماں تو پیدا ۔ ۔ ۔

پہلے ارجن سا کوئی ان کا بھگت ۔ ۔ ۔

پہلے پانڈو سے ویرن وھیر ۔ ۔ ۔

پہلے گوماتا کا دھرتی پہ کچھ مان ۔ ۔ ۔

پہلے گیتا گائیتری کا لوگ مہتو ۔ ۔ ۔

میرا ں کوئی "شری چرنوں" میں ۔ ۔ ۔

پہلے بھارت میں کنگال کا ادھ ۔ ۔ ۔

پہلے یہاں ہم سچے منش تو ۔ ۔ ۔

پہلے اس دیش میں کرشن کے ۔ ۔ ۔

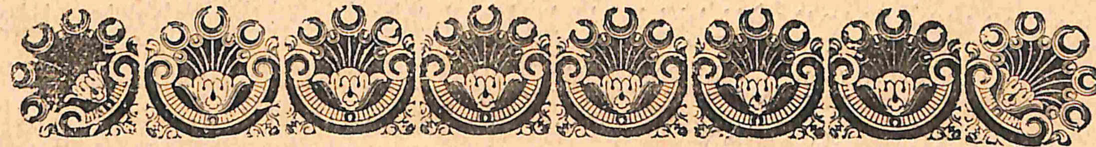
پہلے اس دیش میں گؤ کے گو ۔ ۔ ۔

جب ۔ ۔ ۔

ورس ۔ ۔ ۔

तूंअर्जुनभी मैंपरमेश्वरकीभक्तितैंउत्पन्नहुएब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै अविद्यादिकसर्वउपाधियोंतैंरहितहुआ अभेदरूपकरिकै मैंनिर्गुण ब्रह्मकूंहीं प्राप्तहोवैंगा ॥ तहां श्रुति ॥ (यथानद्यःस्पंदमानाः समुद्रेऽस्तंगच्छंतिनामरूपेविहाय ॥ तथाविद्वान्नामरूपाद्विमुक्तः परात्परंपुरुषमुपैतिदिव्यम्) ॥ अर्थयह ॥ जैसे श्रीगंगायमुनादिकनदीयां आपणेनामरूपकापरित्यागकरिकै समुद्रविषेजाइकै एकताभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे यहविद्वान्पुरुषभी नामरूपतैंरहितहुआ सर्वतैंउत्कृष्ट स्वयंज्योति परमात्मापुरुषकूंहीं अभेदरूपकरिकै प्राप्तहोवैहै इति ॥ ईहां किसीटीकाविषेतैं (मामेवआत्मानमेष्यसि) इसप्रकारतैं पदोंकीयोजनाकरिकै (आत्मानम्) इसपदकरिकै परमात्माकाहीं ग्रहणकऱ्याहै इति ॥ ३४ ॥ ❀ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां श्रीभगवद्गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां नवमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ९ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

इति नवमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ९ ॥



ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ दशमाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहां पूर्व सप्तम अष्टम नवम इन तीनअध्यायोंकरिकै तत्पदार्थरूपपरमेश्वरका सोपाधिकस्वरूप तथानिरुपाधिकस्वरूप दिखाया ॥ तिसतत्पदार्थरूपपरमेश्वरकीजेविभूतियांहैं ॥ तेविभूतियां तिस सोपाधिकस्वरूपकेतौंध्यानविषे उपायभूतहैं ॥ और तेविभूतियां तिसनिरुपाधिकस्वरूपकेतौं ज्ञानविषे उपायभूतहैं ॥ ऐसी परमेश्वरकीविभूतियांभी सप्तमअध्याय विषेतैं (रसोहमप्सुकौंतेय) इत्यादिकवचनोंकरिकै और नवमअध्यायविषेतैं (अहंक्रतुरहंयज्ञः) इत्यादिकवचनोंकरिकै संक्षेपतैं कथनकरीयां ॥ तिन संक्षेपतैं कथनकरीहुई विभूतियोंका विस्तार अब अवश्यकरिकैकहणेयोग्यहै ॥ काहेतैं कितनैंकीबहिर्मुखलोकोंकूंसोपरमेश्वरकास्वरूपध्यानकरणेवासतैभी अत्यंतदुर्विज्ञेयहै ॥ ऐसेस्वरूपकाजो पुनःपुनःकथनहै सोतिसस्वरूपकेज्ञानवासतैहींहै ॥ याकारणतैं श्रीभगवान्नैं यह दशमअध्याय प्रारंभकरीता है ॥ तहां प्रथम अर्जुनकेचित्तविषे उत्साहकरावणेवासतैं परमकृपालु श्रीभगवान् विनाहींपूछेतैं ताअर्जुनकेप्रति कहेहै ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच ॥ भूयएवमहावाहोशृणुमेपरमंवचः ॥ यत्तेहंप्रीयमाणायवक्ष्यामिहितकाम्यया ॥ १ ॥ भूयः । एव । महावाहो । शृणु । मे । परमं । वचः । यत् । ते । अहं । प्रीयमाणाय । वक्ष्यामि । हितकाम्यया ॥ १ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन पुनः भी मैंपरमेश्वरके उत्कृष्ट वचनकूं तूं श्रवणकर जोवचन मैंपरमेश्वर तुमारे हितकी कामनाकरिकै तैं प्रीतिवालेकेतांई कथन करताहूं ॥ १ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेमहान्बाहुवाला अर्जुन तूं पुनःभी मैंपरमेश्वरके अत्यंतउत्कृष्टवचनकूं श्रवणकर ॥ जोवचन मैंपरमआप्त परमेश्वर तुमारेइष्टकेप्राप्तिकीइच्छाकरिकै तुमारेतांई कथनकरताहूं ॥ अब अर्जुनकेप्रति तिसवचनकेउपदेशकरणेकीयोग्यताकेबोधनकरणेवासतै ताअर्जुनका विशेषणकहेहैं (प्रीयमाणायइति) हेअर्जुन जैसे अमृतकेपानतैं प्रीतिकाअनुभवकरीताहै ॥ तैसे मैंपरमेश्वरकेवचनरूपअमृतकेपानतैं तूं प्रीतिकूं अनुभवकरणेहाराहैं ॥ यातैं तुमारेतांई पुनःभी मैं उपदेशकरताहूं ॥ ईहां (प्रीयमाणाय) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ इनोंकेवचनोंकूं श्रवणकरिकै हमारेइष्टकीसिद्धि अवश्यकरिकैहोवैगी याप्रकारकी दृढभावनाकरिकै जोपुरुष प्रीतिपूर्वक तिनवचनोंकूं श्रवणकरेहै ॥ तिसअधिकारीपुरुषकेतांईहीं तत्त्ववेत्तापुरुषनैं ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणा ॥ ताप्रीतितैंरहित पुरुषकेप्रति ब्रह्मविद्याका उपदेशकरणानहीं इति ॥ और तिसवचनकाजो परमं यहविशेषणकथनकऱ्याहै ॥ तापरमविशेषणकरिकै श्रीभगवान्नैं यह अर्थसूचनकऱ्याहै ॥ जिसकारणतैं यहहमारावचन अत्यंतउत्कृष्टहै॥तिसकारणतैं इसहमारेवचनकेश्रवणतैं तुमारेकूं अवश्यकरिकै इष्टअर्थकीप्राप्ति होवैगी इति॥ १॥ ❀ ॥

॥ शंका ॥ हेभगवन् ऐसेवचनतौं पूर्व बहुतवार आप हमारेप्रति कथनकरि आयेहो ॥ तिनवचनोंकूं पुनःअबी किसवासतै कथनकरतेहो ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् दुर्विज्ञेयवस्तुका पुनःपुनःउपदेशकरणेतैंहीं बोधहोवैंहै याप्रकारकेअभिप्रायकरिकै आपणेस्वरूपकीदुर्विज्ञेयताकूं कथन करेहै ॥ अथवा ॥ शंका ॥ हेभगवन् हमारेप्रति तैंपरमेश्वकेस्वरूपकाउपदेशकरणेहारे इंद्रादिकदेवता तथाभृगुआदिकऋषि बहुतहैं ॥ तिनोंकेवचनश्रवणतैंहीं हमारेकूं आपकेस्वरूपकाज्ञान होवैंगा ॥ इसविषे आपकेकहणेकाक्याप्रयोजनहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ जिनइंद्रादिकोंकेवचनतैं तूं हमारेस्वरूपकाज्ञान चाहताहैं तिनइंद्रादिकोंकूंहीं हमारास्वरूप दुर्विज्ञेयहै इसअर्थकूं अबश्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) नमेविदुःसुरगणाःप्रभवंनमहर्षयः ॥ अहमादिर्हिदेवानांमहर्षीणांचसर्वशः ॥ २ ॥ नं । मे । विदुः । सुरगणाः । प्रभवं । नं । महर्षयः । अहम् । आदिः । हिं । देवानां । महर्षीणां । चं । सर्वशः ॥ २ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरके प्रभावकूं इंद्रादिकदेवता नहीं जानैंहैं तथाभृगुआदिकमहान्ऋषिभी नहींजानैं हैं जिसकारणतैं मैंपरमेश्वर तिनदेवतावोंका तथा तिनमहान् ऋषियोंका सर्वप्रकारतैं कारणहूं ॥ २ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकाजो प्रभावहै ॥ अर्थात् आकाशादिकसर्वप्रपंचके उत्पत्ति स्थिति संहार प्रवेश नियमन निग्रह अनुग्रह इत्यादिकोंकेकरणेकाजो सामर्थ्यरूप प्रभावहै ॥ अथवा अनेकविभूतियोंकरिकै आविर्भावरूपजोप्रभवहै ॥ तिसहमारे प्रभावकूं इंद्रादिकदेवता तथाभृगुआदिकमहान्ऋषि सर्वज्ञहुएभी जानतेनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेइंद्रादिकदेवता तथाभृगुआदिकमहान्ऋषि तिसआपकेप्रभावकूं किसकारणतैं नहींजानतेहै॥ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताकेनजानणेविषेहेतुकहेहै (अहमादिर्हिइति) हेअर्जुन जिसकारणतैं मैंपरमेश्वरतिनइंद्रादिकदेवतावोंका तथातिनभृगुआदिकमहान्ऋषियोंका सर्वप्रकारतैं कारणहूं ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वर तिनइंद्रादिकदेवतावोंके तथाभृगुआदिकऋषियोंके उत्पादकपणेकरिकै तथाबुद्धिआदिकोंका प्रवर्त्तकपणेकरिकै कारणहूं ॥ अथवा मैंपरमेश्वर तिनोंका उपादानरूपकरिकै तथानिमित्तरूपकरिकै कारणहूं ॥ तिसकारणतैं तेइंद्रादिकदेवता तथाभृगुआदिकऋषि मैंपरमेश्वरकेकार्यहोणेतैं कारणरूपमैंपरमेश्वरकेप्रभावकूं जानिसकतेनहीं ॥ जैसे पिताके प्रभावकूं पुत्र जानिसकतानहीं ॥ यातैं मैंपरमेश्वरहीं आपणाप्रभाव तुमारेतांई कथनकरताहुं ॥ तहां परमेश्वरतैंहीं सर्वदेवतावों तथासर्वऋषियोंकी उत्पत्तिहोवैहै ॥ यहवार्त्ता ॥ (तस्माच्चदेवाबहुधासंप्रसूताः यस्मिन्युक्तामहर्षयोदेवताश्च ॥) इत्यादिकश्रुतियोंविषे प्रसिद्धहींहै इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ तहां सोपरमेश्वरकेप्रभावकाज्ञान महान्फलकाहेतुहै ॥ यातैं कोईकअधिकारीजनहीं तिसपरमेश्वरकेप्रभावकूं जाने

है ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेंहै ॥ अथवा ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेइंद्रादिकदेवता तथाभृगुआदिकऋषि जोकदाचित् आपपरमेश्वरकेप्रभावका उपदेशकरणेविषे समर्थनहींहैं ॥ तौं आपही हमारेप्रति ताआपणेप्रभावकाउपदेशकरौं ॥ परंतु तिसआपके प्रभावकेजानणे करिकै हमारेकूं कौंनफलहोवैगा ॥ ऐसी अर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताज्ञानकाफल कथनकरेंहै ॥

(मू० श्लो०) योमामजमनादिंचवेत्तिलोकमहेश्वरम् ॥ असंमूढःसमर्त्येषुसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥३॥ यः । माम् । अजम् । अनादिं । च ।
वेत्ति । लोकमहेश्वरम् । असंमूढः । सः । मर्त्येषु । सर्वपापैः । प्रमुच्यते ॥३॥(इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जन्मतैंरहित तथा कारणतैं
रहित तथासर्वलोकोंकामहान्ईश्वर ऐसेमैंपरमेश्वरकूं जोपुरुष जाने है सोपुरुष सर्वमनुष्योंकेमध्यविषे संमोहतैंरहितहुआ सर्वपापोंनैं
परित्यागकरीताहै ॥ ३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरहीं सर्वजगत्काकारणहुं ॥ यातैं नहींवियमानहै आदि क्याकारण जिसका ताका नाम अनादिहै ॥ ऐसाअनादिरूप मैंपरमेश्वरहुं ॥ और अनादिहोणेतैंहीं मैंपरमेश्वर अजहुं ॥ अर्थात् उत्पत्तिरूप जन्मतैंरहितहुं ॥ तथा सर्वलोकोंकामहेश्वरहुं ॥ ऐसे मैंपरमेश्वरकूं जोअधिकारीपुरुष आपणेआत्मासैंअभिन्नरूपकरिकै साक्षात्कारकरेंहै ॥सोपुरुष सर्वमनुष्योंकेमध्यविषे असंमूढहुआ अर्थात् अज्ञानकीनिवृत्तिद्वारा आत्माअनात्माकेतादात्म्यअध्यास रूप संमोहतैंरहितहुआ सर्वपापोंतैंमुक्तहोवैहै ॥ अर्थात् बुद्धिपूर्वककऱ्येहुए तथाअबुद्धिपूर्वककऱ्येहुए भूत भविष्यत् वर्त्तमान सर्वपापोंतै सोतत्त्ववेत्तापुरुष मुक्तहोवैहै ॥ ईहां (प्रमुच्यते) इसवचनविषेस्थितजो प्र यहशब्दहै ॥ ताप्रशब्दकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ यद्यपि अज्ञानीपुरुषभी तिनपापकर्मोंके भोगकरिकै तथाप्रायश्चित्तकरिकै तिनपापकर्मोंतैंमुक्तहोवैहैं ॥ तथापि तेअज्ञानीपुरुष ताकरिकै तिनपापकर्मोंतैं अत्यंतमुक्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं सर्वपापकर्मोंकाकारणरूप जोअज्ञानहै ॥ तथा ताअज्ञानकृतजो देहादिकोंविषे अहंममअध्यासहै ॥ सोअज्ञान तथाअध्यास तिनअज्ञानीपुरुषोंविषे वियमानहै ॥ तिसतैं पुनः पापोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और भोगकरिकैनिवृत्तहुएभी तेपापकर्म संस्काररूपतैं तिनअज्ञानीपुरुषोंविषे बनेरहेहैं ॥ याकारणतैंहीं तिनसंस्कारोंकेवशतैं तेअज्ञानीपुरुष पुनः तिनपापकर्मोंविषे प्रवृत्तहोवैहैं ॥ और तत्त्ववेत्तापुरुषतौ आत्मसाक्षात्कारकरिकै अज्ञानरूपमूलकारणकी तथातत्जन्यअहंममअध्यासकी तथासंस्कारसहितसर्वपापकर्मोंकी निःशेषतैं निवृत्तिहोइजावैहै ॥ यातैं सोतत्त्ववेत्तापुरुषहीं तिनसर्वपापकर्मोतैं अत्यंतमुक्तहोवैहै ॥ इसअर्थविषे ॥ (क्षीयंतेचास्यकर्माणितस्मिन्दृष्टेपरावरे ॥ ज्ञानाऽग्निःसर्वकर्माणिभस्मसात्कुरुतेतथा) ॥ इत्यादिकअनेकश्रुतिस्मृतिवचन प्रमाणरूपहैंइति ॥ ३ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्वश्लोकविषे

(लोकमहेश्वरम्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं आपणेविषे सर्वलोकोंकामहेश्वरपणा कथनकऱ्या ॥ अब तिसी सर्वलोकमहेश्वरपणेकूं विस्तारतैं प्रतिपादनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) बुद्धिर्ज्ञानमसंमोहःक्षमासत्यंदमःशमः ॥ सुखंदुःखंभवोभावोभयंचाभयमेवच ॥ ४ ॥ अहिंसासमतातुष्टिस्तपोदानंयशोऽयशः ॥ भवंतिभावाभूतानांमत्तएवपृथग्विधाः ॥ ५ ॥ बुद्धिः । ज्ञानम् । असंमोहः । क्षमा । सत्यम् । दमः । शमः । सुखम् । दुःखम् । भवः । भावः । भयम् । च । अभयम् । एव । च । अहिंसा । समता । तुष्टिः । तपः । दानम् । यशः । अयशः । भवंति । भावाः । भूतानाम् । मत्तः । एव । पृथग्विधाः ॥ ४ ॥ ५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन बुद्धि ज्ञान असंमोह क्षमा सत्य दम शम सुख दुःख भव भाव भय तथा अभय अहिंसा समता तुष्टि तप दान यश अयश यहलोकप्रसिद्ध नानाप्रकारके कार्यविशेष सर्व प्राणीयोंके मैंपरमेश्वरतैं हीं उत्पन्नहोवैहैं ॥ ४ ॥ ५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वप्राणीयोंके यहबुद्धितैंआदिलैके अयशपर्यंत कार्यविशेष मैंपरमेश्वरतैंहीं उत्पन्नहोवैहैं अन्यकिसीतैंउत्पन्नहोवैंनहीं ॥ अब तिनबुद्धिआदिकोंकास्वरूप कथनकरेहैं ॥ तहां अंतःकरणविषे जोसूक्ष्मअर्थकेविवेककरणेकासामर्थ्यहै ताकानाम बुद्धिहै ॥ और आत्मा अनात्मारूप सर्वपदार्थोंकाजोअवबोधहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ और ज्ञातव्यतारूपकरिकै अथवा कर्त्तव्यतारूपकरिकै प्राप्तभयेजेपदार्थहैं तिनपदार्थोंविषे व्याकुलतातैंरहितहोइकै जाविवेकपूर्वक प्रवृत्तिहै अर्थात् ताकेइष्टअनिष्टरूपफलकेविचारपूर्वक जाप्रवृत्तिहै ताकानाम असंमोहहै ॥ और कठोरवाणी करिकै अथवा दंडादिकोंकरिकै ताडनकऱ्येहुएपुरुषकेचित्तका जोनिर्विकारपणाहै अर्थात् तिसताडनकरणेहारेप्राणीकेअनिष्टकानहींचिंतनकरणाहै ताकानाम क्षमाहै ॥ अथवा आध्यात्मिक आधिदैविक आधिभौतिक यातीन प्रकारकेउपद्रवोंके सहनकरणेकाजोस्वभावहै ताकानाम क्षमाहै ॥ तहां ज्वरादिकरोग आध्यात्मिकउपद्रव कहेजावैहैं ॥ और अतिशीत अतितप्त अतिवर्षा इत्यादिक आधिदैविकउपद्रव कहेजावैहैं ॥ और सर्प व्याघ्र शत्रुइत्यादिकआधिभौतिकउपद्रव कहेजावैहैं इति ॥ और प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै जोअर्थ जिसप्रकारतैं निश्चयकऱ्याहै तिसअर्थकूं तिसीप्रकारतैं कथनकरणा याकानाम सत्यहै ॥ और श्रोत्रादिकबाह्यइंद्रियोंकी जाशब्दादिकविषयोंतैं निवृत्तिहै ताकानाम दमहै ॥ और अंतःकरणकी जातिनशब्दादिकविषयोंतैंनिवृत्तिहै ताकानाम शमहै ॥ और केवलधर्महैअसाधारणकारणजिसका तथाअनुकूलतारूपकरिकैहीं सर्व प्राणीयोंकेज्ञानकाविषय ऐसाजोआनंदहै ताकानाम सुखहै ॥ और केवलअधर्महैअसाधारणकारणजिसका तथाप्रतिकूलतारूपकरिकैहीं सर्वप्राणीयोंकेज्ञानकाविषय ऐसाजोपरितापहै ताकानाम दुःखहै ॥ और उत्पत्तिकानाम भवहै ॥ और सत्ताकानाम भावहै ॥ अथवा (भवोभावः) इसवचनविषे भवःअभावः याप्रकारका

पदच्छेदकरणा ॥ तहां असत्ताकानाम अभावहै ॥ और त्रासकानाम भयहै ॥ त्रासतैंरहितहोणेकानाम अभयहै ॥ ईहां (भयंचाभयमेवच) इसवचनविषे स्थित प्रथमचकारतौं पूर्वउक्तबुद्धिआदिकोंकेसमुच्चयकरावणेवासतैंहै ॥ और दूसराचकारतौं पूर्वनहींकथनकऱ्येहुए बुद्धिआदिकोंकेविरोधी अबुद्धि अज्ञान संमोह अक्षमा असत्य इत्यादिकोंकेसमुच्चयकरावणेवासतैंहै ॥ और एव यहशब्द तिनबुद्धिआदिकोंविषे सर्वलोकप्रसिद्धताके बोधनकरणेवासतैंहै ॥ अर्थात् यहबुद्धि आदिक सर्वलोकविषेप्रसिद्धहींहैं इति ॥ और स्थावरजंगमसर्वप्राणीयोंकीपीडातैंजानिवृत्तिहै ताकानाम अहिंसाहै ॥ अर्थात् शरीरमनवाणीकरिकै जोकिसीभी प्राणीमात्रकूं पीडाकीनहींप्राप्तिकरणी ताकानाम अहिंसाहै ॥ और इष्टवस्तुके तथाअनिष्टवस्तुके प्राप्तहुएभी जाचित्तकी रागद्वेषादिकोंतैंरहितअवस्थाहै ॥ ताकानाम समताहै ॥ और प्रारब्धकर्मकेवशतैं यत्किंचित्भोग्यपदार्थोंकेप्राप्तहुए इतनैंपदार्थोंकरिकैहीं हमारेकूं तृप्तिहै याप्रकारकीजाअलंबुद्धिहै ॥ जिसकूं संतोषकहेहैं ताकानाम तुष्टिहै ॥ और शास्त्रउपदिष्टमार्गकरिकै जोशरीरइंद्रियोंकाशोषणहै अर्थात् कृच्छ्रचांद्रायणादिकव्रतोंकरिकै जोशरीरइंद्रियोंके बलकीक्षीणताकरणी है ताकानाम तपहै ॥ और उत्तमदेशकालविषे सत्पात्रविषे श्रद्धाकरिकै यथाशक्तिपरिमाण जो अन्नसुवर्णादिकपदार्थोंकासमर्पणहै ताकानाम दानहै ॥ और धर्मरूप निमित्ततैं उत्पन्नभईजा लोकविषे प्रशंसादिरूपप्रसिद्धिहै ताकानाम यशहै॥और अधर्मरूपनिमित्ततैं उत्पन्नभईजा लोकविषेनिंदारूपप्रसिद्धिहै ताकानाम अयशहै यह बुद्धितैंआदिलैकेअयशपर्यंत जेकार्यविशेषहैं॥जेबुद्धिआदिककार्य धर्मअधर्मादिकसाधनोंकीविचित्रताकरिकै नानाप्रकारकेहैं ॥ ऐसेसर्वप्राणीयोंके बुद्धिआदिकपदार्थ आपणेआपणेकारणोंसहित मैंपरमेश्वरतैंहींउत्पन्नहोवैहैं॥ अन्याकिसीतैं तेबुद्धिआदिक उत्पन्नहोवैंनहीं ॥ ऐसेसर्वकेकारणरूप मैंपरमेश्वरविषे तिनसर्वलोकोंकामहेश्वरपणाहै याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ ४ ॥ ५ ॥ ❀ ॥ हेअर्जुन केवलबुद्धिआदिकोंकाकारणहोणेतैं मैंपरमेश्वरविषे सोसर्वलोकोंका महेश्वरपणा नहींहैं ॥ किंतु भृगुआदिकमहान्ऋषियोंका तथास्वयंभुवादिकमनुवोंका कारणहोणेतैंभी मैंपरमेश्वरविषे सोसर्वलोकोंकामहेश्वरपणाहै॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू०श्लो०) महर्षयःसप्तपूर्वेचत्वारोमनवस्तथा ॥ मद्भावामानसाजातायेषांलोकइमाःप्रजाः ॥६॥ महर्षयः । सप्त । पूर्वे । चत्वारः । मनवः । तथा । मद्भावाः । मानसाः । जाताः । येषां । लोके । इमाः । प्रजाः ॥ ६ ॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन सृष्टिकेआदिकालविषे उत्पन्नहुए जेभृगुआदिकसप्त महाऋषिहैं तथा सावर्णीआदिकच्यारि मनुहैं जेभृगुआदिक मैंपरमेश्वरकेचिंतनपरायणहैं तथा मनकेसंकल्पमात्रतैं उत्पन्नहुएहैं तथा जिनभृगुआदिकोंकी इसलोकविषे यह ब्राह्मणादिकप्रजाहै ॥ तेभृगुआदिकभी मैंपरमेश्वरतैंहीं उत्पन्नहुएहैं ॥ ६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥१७६॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन पूर्वसृष्टिकेआदिकालविषे उत्पन्नहुए जेभृगुआदिकसप्त महाऋषिहैं कैसेहैंतेभृगुआदिकसप्तऋषिवेदोंकेपाठकूं तथावेदोंकेअर्थकूं भलीप्रकारतैंजानणेहारेहैं ॥ तथा सर्वज्ञहैं ॥ तथा वेदविद्याकेसंप्रदायकी प्रवृत्तिकरणेहारेहैं ॥ याकारणतैंहीं तिनभृगुआदिकसप्तऋषियोंकूं शास्त्रविषे महाऋषिकहेहैं ॥ तहां तिनभृगुआदिकसप्तऋषियोंकेनाम तथासृष्टिकेआदिकालविषे तिनोंकीउत्पत्ति पुराणोंविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (भृगुंमरीचिमत्रिंचपुलस्त्यंपुलहं क्रतुम् ॥ वसिष्ठंचमहातेजाःसोसृजन्मनसासुतान्) अर्थयह ॥ भृगु मरीचि अत्रि पुलस्त्य पुलह क्रतु वसिष्ठ इनसप्तऋषिरूपपुत्रोंकूं सोमहान्तेजवालाब्रह्मा सृष्टिकेआदिकालविषे आपणेमनकरिकै उत्पन्नकरताभया इति ॥ तथा सृष्टिकेआदिकालविषेउत्पन्नहुएजे सावर्णीआदिकनामकरिकैप्रसिद्धच्यारिमनुहैं ॥ अथवा (महर्षयःसप्त) इसवचनकरिकैतौं भृगुआदिकसप्तमहाऋषियोंकाग्रहणकरणा ॥ और (पूर्वेचत्वारः) इसवचनकरिकै तिनभृगुआदिकसप्तऋषियोंतैंभीपूर्वउक्तहुए सनकादिकच्यारिमहाऋषियोंकाग्रहणकरणा ॥ और (मनवस्तथा) इसवचनकरिकै स्वायंभुवआदिकचतुर्दशमनुवोंकाग्रहणकरणा इति ॥ कैसेहैंतेभृगुआदिक सर्व मद्भावाहैं ॥ तहां मैंपरमेश्वरविषेहै भाव क्या भावना जिनोंकी तिनोंकानाम मद्भावाहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकाचिंतनरूपभावनाकेवशतैं आविर्भूतहुआहै मैंपरमेश्वरकाज्ञान तथाऐश्वर्य तथानानाप्रकारकीशक्तियां जिनोंकूं ॥ पुनःकैसेहैंतेभृगुआदिक मानसाहैं ॥ अर्थात् ब्रह्माकेमनकेसंकल्पमात्रतैंहीं उत्पन्नहुएहैं ॥ अन्यमनुष्योंकीन्यांई योनितैंउत्पन्नहुएनहीं ॥ इसीकारणतैंहीं विशुद्धजन्मवालेहोणेतैं तेभृगुआदिकसर्वप्राणीयोतैं श्रेष्ठहैं ॥ और शास्त्रविषे (योनिंविनानशरीरम्) यहजोवचनकह्याहै ॥ सो इसवचनविषे योनिशब्द स्त्रीकेयोनिकावाचकनहीहैं ॥ किंतु सोयोनिशब्द कारणकावाचकहै ॥ अर्थात् कारणतैंविना शरीर उत्पन्ननहींहोवैहै इति ॥ ऐसेभृगुआदिकसप्तमहाऋषि तथासनकादिकच्यारिमहाऋषि तथास्वायंभुवादिकचतुर्दश मनु यहसर्व सृष्टिकेआदिकालविषे हिरण्यगर्भरूपमैं परमेश्वरतैंहीं उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ जिनभृगुआदिकसप्तऋषियोंकी तथासनकादिकच्यारिमहाऋषियोंकी तथास्वायंभुवादिकचतुर्दशमनुवोंकी इसलोकविषे जन्मकरिकै तथाविद्याकरिकै यहब्राह्मणादिकसर्वप्रजा संततिरूपहैइति ॥ ईहां किसीटीकाविषेतौं (लोकइमाः) इसवचनविषे लोकःयहप्रथमाविभक्तिअंतपद ग्रहणकरिकैयहअर्थकऱ्याहै ॥ जिनभृगुआदिकोंकीयहजरायुजादिकच्यारिप्रकारकीप्रजा तथाताप्रजाकेनिवासकाआधारभूतयहलोक दोनों संततिरूपहैं इति ॥ अथवा (येषां) यहषष्ठीविभक्ति येभ्यः इसपंचमीविभक्तिकेअर्थविषेहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ जिनभृगुआदिकोंतैं यहजरायुजादिकच्यारिप्रकारकीप्रजा तथायहलोक उत्पन्नहोताभयाहै ॥ ऐसेभृगुआदिकोंकाभीकारणरूप मैंपरमेश्वरविषे सर्वलोकोंकामहेश्वरपणाहै याकेविषेक्याकहणाहै ॥ इति ॥ ६ ॥ ❀ ॥
इसकारणतैं सोपाधिकपरमेश्वरके प्रभावकूंकथनकरिकै अब तिसप्रभावकेज्ञानकाफल कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) एतांविभूतिंयोगंचममयोवेत्तितत्त्वतः ॥ सोऽविकंपेनयोगेनयुज्यतेनात्रसंशयः ॥ ७ ॥ एताम् । विभूतिम् । योगम् । च । मम । यः । वेत्ति । तत्त्वतः । सः । अविकंपेन । योगेन युज्यते । न । अत्र । संशयः ॥ ७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जोपुरुष मैंपरमेश्वरके इसपूर्वउक्त विभूतिकूं तथा योगकूं यथावत् जानैहै सोपुरुष अचल योगकरिकै युक्तहोवैहै इस विषे कोईभीप्रतिबंधक नहींहै ॥ ७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्व (बुद्धिर्ज्ञानम्) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकैकथनकरीहुई जाबुद्धितैं आदिलैकेअयशपर्यंत मैंपरमेश्वरकीविभूतिहै ॥ तथा भृगुआदिक सप्तमहाऋषिरूप तथासनकादिकच्यारिमहाऋषिरूप तथास्वायंभुवादिकचतुर्दशमनुरूप जाहमारीविभूतिहै ॥ अर्थात् तिसतिस बुद्धिआदिरूपकरिकै तथातिसतिस महाऋषिआदिरूपकरिकै जामैंपरमेश्वरकीस्थितिहै ऐसी मैंपरमेश्वरकीविभूतिकूं जोअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं यथावत् जानैहै ॥ तथा जोअधिकारीपुरुष मैंपरमेश्वरकेयोगकूं यथावत् जानैहै॥ ईहां तिसतिसअर्थकेउत्पन्नकरणेकासामर्थ्यरूप जोपरमऐश्वर्यहै॥ताकानाम योगहै ऐसेपरमऐश्वर्यरूपयोगकूं जोपुरुष जानैहै॥ सोअधिकारीपुरुष चलायमानतातैं रहित योगकरिकै युक्तहोवैहै ॥ अर्थात् सोपुरुष तत्वज्ञानकीस्थिरतारूपसमाधिकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ हेअर्जुन इसहमारी विभूतिके तथायोगके जानणेहारेपुरुषकूं तासमाधिरूपयोगकीप्राप्तिविषे कोईभीसंशयनहींहै अर्थात् कोईभीप्रतिबंधकरणेहारानहींहै इति ॥ ७ ॥ ❁ ॥ तहां परमेश्वरके जिस विभूति योग दोनोंके ज्ञानकरिकै इसअधिकारी पुरुषकूं अचलसमाधिरूपयोगकी प्राप्तिहोवैहै ॥ तिसज्ञानके स्वरूपकूं अब श्रीभगवान् च्यारि श्लोकोंकरिकै वर्णनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) अहंसर्वस्यप्रभवोमत्तःसर्वंप्रवर्त्तते ॥ इतिमत्वाभजंतेमांबुधाभावसमन्विताः ॥ ८॥ अहं । सर्वस्य । प्रभवः । मत्तः । सर्वं । प्रवर्त्तते । इति । मत्वा । भजंते । मां । बुधाः । भावसमन्विताः॥८॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरहीं सर्वजगत्के उत्पत्तिकारणहूं तथा मैंपरमेश्वरतैंहीं सर्व प्रवृत्तहोवैहै इसप्रकारतै मानिकरिकै बुद्धिमान् जन प्रेमरूपभावकरिकैयुक्तहुए मैंपरमेश्वर कूं आराधनकरैहैं ॥ ८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन वासुदेवनामा मैंपरब्रह्महीं इससर्वजगत्के उत्पत्तिकाकारणहूं ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरहीं इससर्वजगत्का उपादानकारणरूपहूं तथानिमित्तकारण रूपहूं ॥ तथा इसजगत्के स्थितिनाशादिकसर्वव्यवहारभी मैंपरमेश्वरतैंहीं प्रवर्त्तहोवैहै ॥ अर्थात् सर्वशक्तिसंपन्न तथासर्वज्ञ ऐसेमैंअंतर्यामीपरमेश्वरकरिकै प्रेरणा

कन्याहुआ यह सूर्यचंद्रमादिकसर्वजगत् आपणीआपणीमर्यादाका नहींउल्लंघनकरिकै प्रवर्त्तहोवैहै ॥ अथवा प्रत्यक्साक्षीआत्मारूपमैंपरमेश्वरकीसत्तास्फूर्तिकंपाइकै यहबुद्धिइंद्रियादिकसर्वप्रपंच नानाप्रकारकीचेष्टाकूंकरेहै ॥ इसप्रकारके मैंपरमेश्वरकेस्वरूपकूं जानिकरिकैविवेककरिकैजान्याहैतत्त्ववस्तुजिनोंनैं ऐसेबुद्धिमान्पुरुष परमार्थतत्त्वकाग्रहणरूपप्रेमरूपभावकरिकैयुक्तहुए मैंपरमेश्वरकूं भजेहैं ॥ अर्थात् नित्य निरंतर मैंपरमेश्वरकाहीं चिंतनकरेहैं ॥ ८ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोआपका प्रेमपूर्वकभजन कैसाहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिसप्रेमपूर्वकभजनकास्वरूप वर्णनकरेहै ॥

(मू०श्लो०) मच्चित्तामद्गतप्राणाबोधयंतःपरस्परम् ॥ कथयंतश्चमांनित्यंतुष्यंतिचरमंतिच ॥९॥ मच्चित्ताः । मद्गतप्राणाः । बोधयंतः । परस्परं । कथयंतः । च । माम् । नित्यं । तुष्यंति । च । रमंति । च ॥ ९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरविषैहै चित्त जिनोंका तथा मैंपरमेश्वरकूंप्राप्तहुएहैप्राणजिनोंके तथा परस्पर मैंपरमेश्वरकाहीं बोधनकरतेहुए तथा नित्यहीं मैंपरमेश्वरकूं कथन करतेहुए तेहमारेभक्त संतोषकूं प्राप्तहोवैहै तथा सुखकूंअनुभवकरेहैं ॥ ९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरविषेहींहैचित्तजिनोंका तिनोंकानाम मच्चित्ताहै ॥ अथवा मैंपरब्रह्महींहुंचित्तविषेजिनोंके तिनोंकानाम मच्चित्ताहै ॥ अर्थात् जेपुरुष चित्तकरिकै मैंपरमेश्वरकाही सर्वदा चिंतनकरेहैं ॥ और मैंपरमेश्वरकूं हींप्राप्तहुएहैं प्राण क्या चक्षुआदिकइंद्रिय जिनोंके तिनोंकानाम मद्गतप्राणाहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकेवास्तैहींहै चक्षुआदिकइंद्रियोंकाव्यापार जिनोंके तिनोंकानाम मद्गतप्राणाहै ॥ अथवा बाह्यविषयोंतैंनिवृत्तकरिकै ॥ मैंपरमेश्वराविषेहीं लयकरेहैं चक्षुआदिकसर्वकरणजिनोंनैं तिनोंकानाम मद्गतप्राणाहै ॥ अथवामैंपरमेश्वरके भजन अर्थहै प्राण क्या जीवन जिनोंका अन्यकिसीप्रयोजनवास्तै जिनोंकाजीवनहैनहीं तिनोंकानाम मद्गतप्राणाहै ॥ तथा जेपुरुष विद्वान्पुरुषोंकीसभाविषे श्रुतिवचनोंकरिकै तथाश्रुतिअनुकूलयुक्तियोंकरिकै अन्योन्य मैंपरमेश्वरकाहीं बोधनकरेहैं ॥ तथा जेपुरुष नित्यप्रति आपणेश्रद्धावान्शिष्योंकेतांई मैंपरमेश्वरकाहीं ज्ञेयरूपकरिकै तथाध्येयरूपकरिकै उपदेशकरेहैं ॥ इसप्रकार मैंपरमेश्वरविषेजोचित्तकाअर्पणहै तथाबाह्यनेत्रादिककारणोंकाअर्पणहै तथाआपणेजीवनकाअर्पणहै तथास्वसमानपुरुषोंका जोपरस्पर मैंपरमेश्वरकाबोधनहै तथा आपणेतैंन्यूनबुद्धिवालेशिष्योंकेतांई जोमैंपरमेश्वरकाउपदेशकरणाहै यहहीं मैंपरमेश्वरकाभजनहै ॥ इसप्रकारके मैंपरमेश्वरकेभजनकरिकैहीं तेविद्वान्पुरुष तोषकूं प्राप्तहुएहैं ॥ अर्थात् इस परमेश्वरकेभजनकीप्राप्तिकरिकैहीं हम कृतकृत्यहूएहैं इसभगवद्भजनतैंअन्य कोईभीपदार्थ हमारेइष्टकासाधन नहींहै इसप्रकारकेज्ञानरूप संतोषकूं प्राप्तहुएहैं ॥ तथा तिससंतोषकरिकैहीं तेविद्वान्जन सर्वतैंउत्तमसुखकूं अनुभवकरेहैं ॥ संतोषकरिकैहींउत्तमसुखकीप्राप्ति होवैहै यहवार्त्ता पतंजलिभग

वान्नैंभी कथनकरीहै ॥ तहांसूत्रम् ॥ (संतोषादनुत्तमःसुखलाभःइति) ॥ अर्थयह ॥ इसअधिकारीपुरुषकूं तिससंतोषतैंहीं सर्वतैंउत्तमसुखकी प्राप्तिहोवैहै इति ॥ यहवार्त्ता पुराणविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (यच्चकामसुखंलोकेयच्चदिव्यंमहत्सुखम् ॥ तृष्णाक्षयसुखस्यैते नार्हतः षोडशींकलाम्) ॥ अर्थयह ॥ इस लोकविषे जितनाकी विषयजन्यसुखहै तथास्वर्गादिकलोकोंविषे जितनाकी विषयजन्यमहान्दिव्यसुखहै ॥ तेसर्वसुख तृष्णाकीनिवृत्तिरूपसंतोषजन्यसुखके षोडशवेंभोगकेतुल्यभीनहींहोवैहै इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ हेअर्जुन जेअधिकारीजन इसपूर्वउक्तप्रकारतैं मैंपरमेश्वरकाभजनकरैहैं ॥ तिनअधिकारीजनोंकूं मैंपरमे श्वरभी तिसबुद्धियोगकीप्राप्तिकरिकै आपणेनिर्गुणस्वरूपकीहीं प्राप्तिकरूंहूं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) तेषांसततयुक्तानांभजतांप्रीतिपूर्वकम् ॥ ददामिबुद्धियोगंतंयेनमामुपयांतिते ॥ १० ॥ तेषां । सततयुक्तानां । भज तां । प्रीतिपूर्वकम् । ददामि । बुद्धियोगं । तं । येन । मांम् । उपयांति । ते ॥१०॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरविषेहैए काग्रबुद्धिजिनोंकी तथा प्रीतिपूर्वकै मैंपरमेश्वरकाभजनकरणेहारे तिनंभक्त जनोंके तिसपूर्वउक्त बुद्धियोगकूं मैंपरमेश्वर उत्पन्नकरूंहूं जिसंबुद्धियोगकरिकै तेंभक्तजन मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपकरिकै प्राप्तहोवैहैं ॥ १० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्व (मच्चित्तामद्गतप्राणाः) इसश्लोककरिकै कथनकऱ्याजो मैंपरमेश्वरकेभजनकाप्रकारहै ॥ तिसप्रकारकरिकै जेपुरुष मैंपरमेश्वरकाभजन करैहैं ॥ तथा सर्वकालविषे मैंपरमेश्वरविषेहैएकाग्रबुद्धिजिनोंकी ॥ इसीकारणतैंहीं जेपुरुष लाभ पूजा ख्याति इत्यादिक लौकिकप्रयोजनोंकीनहीं इच्छा करतेहुए अत्यंतप्रीतिपूर्वक एकमैंपरमेश्वरकाहीं भजनकरैहैं ॥ तिनभक्तजनोंके तिसपूर्वउक्तबुद्धियोगकूं मैंपरमेश्वरहीं उत्पन्नकरूंहूं ॥ अर्थात् (सोऽविकंपेनयोगेनयु ज्यते)इसवचनकरिकै पूर्व कथनकऱ्याजो मैंपरमेश्वरकेवास्तवस्वरूपकूंविषयकरणेहारा सम्यक्दर्शनरूपबुद्धियोगहै ॥ तिसबुद्धियोगकूं मैं परमेश्वरहीं उत्पन्नकरूंहूं ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिसबुद्धियोगकरिकै तिनअधिकारीजनोंकूं कौंनफलप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताबुद्धियोगकाफल कथनकरेहै (येनमामुपयांतितेइति) हेअर्जुन जिसबुद्धियोगकरिकै तेहमारेभक्तजन मैंपरमेश्वरकूंहीं आपणाआत्मारूपकरिकै प्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् जैसे घटरूपउपाधिके निवृत्तहुए घटाकाश अभेदरूपकरिकै महाकाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा जैसेश्रीगंगायमुनादिकनदीयां आपणेआपणेनामरूपकापरित्यागकरिकै समुद्रविषेअभेदभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे तेहमारेभक्तजनभी हमारीभक्तिकरिकैउत्पन्नहुए तत्त्वसाक्षात्कारकरिकै मैंपरमेश्वरकूं अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् मैंअद्वितीयनिर्गुणपरमे श्वरकूं आपणाआत्मारूपहींजानेहैं इति ॥ १० ॥ ❀ ॥ तहां आपणेभक्तजनोंकेप्रति परमेश्वरनैं प्राप्तकऱ्याजो तत्त्वज्ञानरूपबुद्धियोगहै ॥ सोबुद्धियोग जिस

अज्ञानकीनिवृत्तिरूपव्यापारवालाहुआ आनंदस्वरूपआत्माकीप्राप्तिरूपफलकी प्राप्तिकरेहै ॥ तिसमध्यवर्त्तीव्यापारकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) तेषामेवानुकंपार्थमहमज्ञानजंतमः ॥ नाशयाम्यात्मभावस्थोज्ञानदीपेनभास्वता ॥ ११ ॥ तेषाम् । एव । अनुकं पार्थम् । अहम् । अज्ञानजम् । तमः । नाशयामि । आत्मभावस्थः । ज्ञानदीपेन । भास्वता ॥ ११ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन तिनंभक्तजनोंके ही अनुग्रहअर्थ तिनोंके आत्माकारवृत्तिविषेस्थितहुआ मैंपरंब्रह्म चिदाभासयुक्त तिसँवृत्तिज्ञानरूप दीपककरिकै तिनोंके अज्ञानजन्य आवरणरूपतमकूं नाशकरूंहूं ॥ ११ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वउक्तरीतिसैं जेअधिकारीजन मैंपरमेश्वरकाभजनकरेहैं तिनभक्तजनोंकेहीं अनुकंपाअर्थ अर्थात् इनहमारेभक्तजनोंका किसीभीप्रकारक रिकै श्रेयहोवै याप्रकारकेअनुग्रहवासतै मैंस्वप्रकाश चैतन्य आनंदअद्वितीयरूप प्रत्यक्आत्मा तिनभक्तजनोंके आत्मभावविषेस्थितहुआ अर्थात् तिनभक्तज नोंकी महावाक्यतैंजन्य जाआत्माकार अंतःकरणकीवृत्तिहै तावृत्तिविषे विषयतारूपकरिकैस्थितहुआ तिसीहीं चिदाभासयुक्त अंतःकरणकी वृत्तिरूपज्ञानदीप करिकै अज्ञानजन्यतमकूं नाशकरूंहूं ॥ अर्थात् अज्ञानहैउपादानकारणजिसका ऐसाजो मिथ्याज्ञानरूप आत्माविषयक आवरणरूपअंधकारहै तिसआवरणरू पतमकूं ताकेउपादानकारणरूपअज्ञानकानाशकरिकै नाशकरूंहूं ॥ काहेतैं लोकप्रसिद्ध सर्वभ्रमस्थलविषे तिसभ्रमकाउपादानकारणजोअज्ञानहै सोअज्ञान अ धिष्ठानकेज्ञानकरिकैहीं निवृत्तहोवैहै ॥ अन्यकिसीउपायकरिकै सोअज्ञाननिवृत्तहोवैनहीं ॥ जैसे सर्परजतादिरूपभ्रमका उपादानकारणजोअज्ञानहै ॥ सोअज्ञान रज्जुशुक्तिआदिकअधिष्ठानकेज्ञानकरिकैहीं निवृत्तहोवैहै ॥ अन्यकिसीउपायकरिकै ताअज्ञानकीनिवृत्ति होवैनहीं ॥ तथा सर्वस्थलविषे उपादानकारणकेनाश करिकै उपादेयरूपकार्यकाभी अवश्यकरिकैनाशहोवैहै ॥ जैसे मृत्तिकातंतुआदिकउपादानकारणकेनाशकरिकै उपादेयरूपघटपटादिककार्योंकाभी अवश्यकरिकैनाश होवैहै ॥ तैसे आत्माकारअंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञानकरिकै अज्ञानरूपउपादानकारणकेनाशहुएतैं तिसतमरूपउपादेयकानाशभी अवश्यकरिकैहोवैहै इति ॥ ईहां (ज्ञानदीपेन) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं आत्मज्ञानविषे दीपककीसादृश्यतारूप रूपालंकार कथनकऱ्या ॥ तारूपालंकारकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ जैसे दीपककरिकै अंधकारकीनिवृत्तिकरणेविषे केवल तद्दीपककीउत्पत्तिमात्रहीं अपेक्षितहोवैहै तिसदीपककीउत्पत्तितैंभिन्न दूसरे किसीकर्मकी अथवाअभ्यासकी अपेक्षाहोवैनहीं ॥ और तादीपककरिकै अंधकारकीनिवृत्तिहुएतैंअनंतर पूर्वविद्यमानघटादिकवस्तुवोंकीहीं अभिव्यक्तिहोवैहै ॥ पूर्वनहींउत्पन्नहुईकिसीवस्तुकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ तैसे आत्मज्ञानकरिकै अज्ञानकीनिवृत्तिकरणेविषे तिसआत्मज्ञानकीउत्पत्तिमात्रहीं अपेक्षितहोवैहै ॥ तिसआ

त्मज्ञानकीउत्पत्तितैंभिन्न दूसरेकिसीकर्मकी अथवा अभ्यासकीअपेक्षाहोवैनहीं ॥ और ताआत्मज्ञानकरिकै अज्ञानकीनिवृत्तितैं अनंतर पूर्वविद्यमानहुएहीं ब्रह्मभाव रूपमोक्षकीअभिव्यक्तिहोवैहै ॥ कोईपूर्वनहींउत्पन्नहुएमोक्षकी तिसआत्मज्ञानतैं उत्पत्तिहोवैनहीं ॥ जिसउत्पत्तिकरिकै तिसमोक्षविषेभी स्वर्गादिकफलोंकी न्यांई नाशवत्ता अथवा कर्मादिकोंकीअपेक्षा होवै इति ॥ और (भास्वता) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं यह अर्थ सूचनकऱ्या ॥ जैसे वायुतैंरहितदे शविषेस्थित प्रकाशमानदीपकविषे तीव्रपवनादिकप्रतिबंधकहोवैनहीं ॥ तैसे मैंपरमेश्वरकीभक्तिकरिकैप्राप्तहुए आत्मज्ञानविषे असंभावनादिकदोष प्रति बंधकहोवैनहीं इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ इसप्रकारतैं परमेश्वरके विभूतिकूं तथायोगकूं सामान्यतैं श्रवणकरिकै पुनःविशेषकरिकै ताविभूतियोगकेश्रवणकर णेकी परमउत्कंठाकूंप्राप्तहुआ जोअर्जुन प्रथम श्रीभगवान्कीस्तुतिकूंकरैहै ॥

(मू० श्लो०) अर्जुनउवाच॥ परंब्रह्मपरंधामपवित्रंपरमंभवान् । पुरुषंशाश्वतंदिव्यमादिदेवमजंविभुम्॥१२॥आहुस्त्वामृषयःसर्वेदेवर्षि र्नारदस्तथा । असितोदेवलोव्यासःस्वयंचैवब्रवीषिमे ॥ १३ ॥ परं । ब्रह्म । परं । धाम । पवित्रं । परमं । भवान् । पुरुषं । शाश्वतं । दिव्यम् । आदिदेवम् । अजं । विभुम् । आहुः । त्वाम् । ऋषयः । सर्वे । देवर्षिः । नारदः । तथा । असितः । देवलः । व्यासः । स्वयं । च । एव । ब्रवीषि । मे ॥ १२ ॥ १३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् पर ब्रह्म तथा परम धाम तथापरम पवित्र आपहींहो जिसकारणतैं भृगुआदिकसर्व ऋषि तथा देवर्षि नारद तथाअसित तथादेवल तथाव्यास यहसर्व हमारेताई तुमारेकूं पुरुष शाश्वत दिव्य आदिदेव अज विभु रूप कथनकरैहैं तथा साक्षात्आप हीं कथनकरते हो ॥ १२ ॥ १३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् आप परब्रह्मरूपहो ॥ अर्थात् तत्ववेत्तापुरुषोंकूंप्राप्तहोणेयोग्य जोसर्वउपाधियोंतैंरहित निर्विशेषब्रह्महै सोआपहींहो ॥ ईहां (परम्) इस विशेषणकरिकै उपासनाकरणेयोग्य सोपाधिकअपरब्रह्मकीव्यावृत्तिकथनकरीहै ॥ काहेतैं (तदेवब्रह्मत्वंविद्धिनेदंयदिदमुपासते) यहश्रुति उपासनाकरणेयोग्य सो पाधिकअपरब्रह्मका निषेधकरिकै निर्विशेषचैतन्यकूंहीं ब्रह्मकहेहै ॥ पुनःकैसेहोआप परंधामहो ॥ अर्थात् स्थूलतैंआदिलैकेअव्याकृतपर्यंत सर्वप्रपंचकाआश्र यरूपहो ॥ अथवा परमप्रकाशरूपहो ॥ ईहांभी (परम्) इसविशेषणकरिकै वृत्तिरूपअपरप्रकाशकीव्यावृत्ति कथनकरीहै ॥ काहेतैं (ह्रीर्धीर्भीरित्येतत्सर्वंमनएव) यहश्रुति तिसवृत्तिरूपज्ञानकूं मनकाहींपरिणामविशेष कथनकरैहै ॥ पुनःकैसेहोआप परमपवित्रहो ॥ अर्थात् लोकशास्त्रविषेप्रसिद्ध जितनैंकीपावनकरणेहारे तीर्थादिकहैं ॥ तिनसर्वोंतैं आप परम उत्तम पावनकरणेहारेहो ॥ काहेतैं श्रद्धापूर्वककऱ्येहुए तेतीर्थादिक इसपुरुषके केवलपापकर्मकूंहीं नाशकरैहैं ॥ तिनपापकर्मोंके

कारणरूपअज्ञानकूं नाशकरतेनहीं ॥ और आपपरब्रह्मतौं इनअधिकारीपुरुषोंकेवृत्तिविषेआरूढहोइकै अज्ञानरूपकारणसहित सर्वपापकर्मोंकूंनाशकरोहो ॥ याकारणतेंहीं (पवित्राणांपवित्रंयोमंगलानांचमंगलम्) इत्यादिकस्मृतिवचन आपकूं पवित्रकरणेहारेतीर्थादिकसर्वपवित्रोंकाभी पवित्रकरणेहारा कथनकरेहैं॥ तथा सर्व मंगलोंकाभी मंगलरूप कथनकरेहैं ॥ शंका ॥ हेअर्जुन ऐसाहमारास्वरूप तुमनें केवल आपणीबुद्धिकरिकै निश्चयकर्‍याहै॥अथवा किसीप्रमाणतैं निश्चयकर्‍याहै ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाकेहुए ॥ अर्जुन तिसउक्तस्वरूपविषे परमआप्तरूपऋषियोंके तथासाक्षात्श्रीभगवान्के वचनरूपप्रमाणकूंकथनकरेहै (पुरुषंशाश्वतम्) इत्यादिकसार्द्धश्लोककरिकै ॥ हेभगवन् ज्ञाननिष्ठावाले जेभृगुवसिष्ठादिकसर्वऋषिहैं ॥ तथा देवऋषिजोनारदहै ॥ तथा असितऋषिजोहै ॥ तथा देवलऋषिजोहै ॥ तथा साक्षात्विष्णुकाअवताररूपजोव्यासमुनिहै ॥ यहसर्वऋषिभी हमारेतांई इसीप्रकारके तुमारेस्वरूपकूं कथनकरतेभयेहैं ॥ तेभृगुआदिकसर्वऋषि किसप्रकारकेहमारे स्वरूपकूं कथनकरतेभयेहैं ॥ ऐसीश्रीभगवान्कीशंकाकेहुए अर्जुनकहेहै (पुरुषमिति) हेभगवन् तेभृगुआदिकसर्वऋषिभी अनंतमहिमावालेआपपरमेश्वरकूं पुरुषकहेहैं ॥ अर्थात् (पुरुषान्नपरंकिंचित्साकाष्ठासापरागतिः) इसश्रुतिविषे पुरुषशब्दकरिकै कथनकर्‍याजो निर्विशेषपरब्रह्महै तिसपरब्रह्मरूप आपकूं कथनकरेहैं ॥ तथा तेऋषि आपकूं शाश्वत कहेहैं अर्थात् भूत भविष्यत् वर्त्तमान सर्वकालविषे एकरूप कहेहैं ॥ तथा तेऋषि आपकूं दिव्य कहेहैं ॥ तहां (परमेव्योमन्सर्वाभूतानि) इसश्रुतिविषे परमव्योमशब्दकरिकैकथनकर्‍याजो स्वस्वरूपहै तास्वस्वरूपकानाम दिवहै तादिवविषेजोविराजमानहोवै ताकानाम दिव्यहै ॥ ऐसेदिव्यरूप आपकूं कहेहैं ॥ अर्थात् सर्वप्रपंचतैंरहितकहेहैं ॥ तथा तेऋषि आपकूं आदिदेव कहेहैं ॥ ईहां सर्वजगत्केकारणकानाम आदिहै और स्वप्रकाशकानाम देवहै ॥ जो आदिहोवे तथादेवहोवै ताकानाम आदिदेवहै ॥ अर्थात् तेऋषि आपकूं सर्वजगत्काकारणरूप तथास्वप्रकाशरूप कहेहैं ॥ ईहां कारणकीस्वप्रकाशताकहणेतें नैयायिकोंनैंकल्पनाकर्‍येहुए परमाणुरूपकारणकी तथा सांख्यीयोंनैंकल्पनाकर्‍येहुए प्रधानरूपकारणकी व्यावृत्तिकरी ॥ तेप्रधानपरमाणुआदिसर्व जडहोणेतें परप्रकाशहींहैं ॥ तथा तेऋषि आपकूं अज कहेहैं अर्थात् जन्मतैंरहित कहेहैं ॥ तथा तेऋषि आपकूं विभु कहेहैं ॥ अर्थात् सर्वत्रव्यापककहेहैं ॥ हेभगवन् केवल तेभृगुआदिकऋषिहीं हमारेतांई इसप्रकारकेतुमारेस्वरूपकूं नहींकथनकरेहैं ॥ किंतु जिसआपपरमेश्वरकेवेदरूपवचनोंकेअनुसारीहुएहीं तिनभृगुआदिकऋषियोंकेवचन प्रमाणरूपहोवैहै ॥ ऐसेसाक्षात्आपभगवान्हीं हमारेतांई (भोक्तारंयज्ञतपसां सर्वभूतस्थितंयोमाम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै इसीप्रकारकेआपके स्वरूपकूंकथनकरतेभयेहो इति ॥ ईहां यद्यपि (आहुस्त्वामृषयःसर्वे) इसवचनविषेस्थितजो सर्व यहशब्दहै ॥ तासर्वशब्दकरिकैहीं तिननारदादिकसर्वऋषियोंकाग्रहणहोइसकेहै तथापि नारद असित देवल श्रीव्यास इनचारोंकाजो अर्जुननें नामलैके पृथक्ग्रहणकर्‍याहै ॥ सो साक्षात् परमेश्वरकेस्वरूपकेवक्तापणेकरिकै

तिननारदादिकोंकीअत्यंत श्रेष्ठताकेबोधनकरणेवासतैंहै इति ॥ और (आहुस्त्वामृषयःसर्वे) इसवचनकरिकै जो अर्जुननैं आपणेनिश्चयविषे ऋषियोंकेवचनोंकी संमति कथनकरीहै ॥ ताकरिकैयहअर्थ सूचनकऱ्याहै ॥ इनअधिकारीपुरुषोंनैं शास्त्रद्वारा आपणीबुद्धिकरिकै निश्चयकऱ्याहुआभी आत्माकास्वरूप ताकेविषे पुनःसंशयकी अनुत्पत्तिवासतै ब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषोंकीसंमति अवश्यकरिकै ग्रहणकरणी इति ॥ १२ ॥ १३ ॥ ❀ ॥ तहां गुरुशास्त्रउपदिष्टअर्थविषे इस अधिकारीपुरुषनैंकदाचित्भी संशयनहींकरणा ॥ किंतु सो गुरुशास्त्रनैं उपदेशकऱ्याहुआ सर्वअर्थ सत्यहै याप्रकारकीसत्यत्वबुद्धिहींकरणी ॥ इसअर्थकूंसूचनकरताहुआ सोअर्जुन तिनवचनोंविषे आपणेसत्यत्वबुद्धिकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) सर्वमेतदृतंमन्येयन्मांवदसिकेशव ॥ नहितेभगवन्व्यक्तिंविदुर्देवानदानवाः ॥ १४ ॥ सर्वम्[६] । एतत्[५] । ऋतम्[७] । मन्ये[८] । यत्[३] । माम्[२] । वदसि[४] । केशव[१] । न[१४] । हि । ते[११] । भगवन्[१०] । व्यक्तिं[१२] । विदुः[१५] । देवाः[१३] । न[१७] । दानवाः[१६] ॥ १४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेकेशव[१] मैंअर्जुनकेप्रति[२] जोवचन[३] आप कथनकरतेहो[४] यह सर्ववचन[६] मैं सत्य[७] मानताहूं[८] जिसकारणतैं[९] हेभगवन्[१०] तुमारे[११] प्रभावकूं[१२] देवताभी[१३] नहीं[१४] जानतेहैं[१५] तथा दानवभी[१६] नहीं[१७] जानतेहैं ॥ १४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेकेशव मैंअर्जुनकेप्रति जोपूर्वआपनैं आपकास्वरूप कथनकऱ्या ॥ तथा भृगुआदिकसर्वऋषियोंनैं जोआपकास्वरूप कथनकऱ्याहै ॥ तिनसर्ववचनोंकूं मैंअर्जुन सत्यहींमानताहूं ॥ हेभगवन् तुमारेवचनोंविषे हमारेकूं किंचित्मात्रभी अप्रमाणपणेकीशंकानहींहै ॥ इसहमारेहृदयकीवार्त्ताकूं सर्वज्ञहोणेतैं आप जानतेहींहो ॥ यहअर्थ अर्जुननै केशव इससंबोधनकरिकैसूचनकऱ्या ॥ तहां (केशौवातिअनुकंप्यतयाअवगच्छतीतिकेशवः) ॥ अर्थयह ॥ क नाम ब्रह्माकाहै और ईश नामरुद्रकाहै तिनदोनोंकूं अनुग्रहकरिकैजोप्राप्तहोवै ताकानाम केशवहै ॥ इसप्रकारकीव्युत्पत्तिकूंअंगीकारकरिकै सोकेशवशब्द निरतिशयऐश्वर्यकाहीं प्रतिपादकहै ॥ ऐसेकेशवनामवाले आपपरमेश्वर हमारेहृदयकेवृत्तांतकूंजानतेहींहो इति ॥ यातैं हेभगवन् जोपूर्व आपनैं (नमेविदुःसुरगणाः प्रभवंनमहर्षयः) इत्यादिकवचन कथनकऱ्येथे ॥ तेसर्व आपकेवचन यथार्थहींहै ॥ हेभगवन् अर्थात् हेसमग्रऐश्वर्यादिकषट्भगसंपन्न ॥ तुमारेप्रभावकूं बहुत बुद्धिमान् इंद्रादिकदेवताभी जानिसकतेनहीं ॥ तथा तुमारेप्रभावकूं मधुआदिकदानवभी जानिसकतेनहीं ॥ तथा तुमारेप्रभावकूं भृगुआदिकमहान्ऋषिभी जानिसकतेनहीं ॥ जबी तिस तुमारेप्रभावकूं सर्वज्ञ इंद्रादिकदेवता तथामधुआदिकदानव तथाभृगुआदिकमहान्ऋषिभी नहींजानिसकते ॥ तबी इदानीं कालकेअल्पज्ञमनुष्य तिस आपकेप्रभावकूं नहींजानेहैं याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ हेभगवन् जिसकारणतैं आपपरमेश्वर तिनदेवता

ऋषिआदिकसर्वोंकाआदिकारणहो ॥ तथा तिनदेवतावोंकरिकैभी जानणेकूंअशक्यहो ॥ तिसकारणतैं तुमआपहीं आपकेप्रभावकूं यथावत्जानतेहो ॥ इसअर्थकूं अब अर्जुन कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) स्वयमेवात्मनात्मानंवेत्थत्वंपुरुषोत्तम ॥ भूतभावनभूतेशदेवदेवजगत्पते ॥ १५ ॥ स्वयम् । एव । आत्मना । आत्मानम् । वेत्थ । त्वम् । पुरुषोत्तम । भूतभावन । भूतेश । देवदेव । जगत्पते ॥ १५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेपुरुषोत्तम हेभूतभावन हेभूतेश हेदेवदेव हेजगत्पति श्रीभगवान् अन्यकेउपदेशतैंविनाहीं तूं आपणेस्वरूपकरिकै आपणेआत्माकूं जानताहैं॥१५॥(इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् अन्यकिसीकेउपदेशतैंविनाहीं तूं आपहीं आपणेस्वप्रकाशस्वरूपकरिकै आपणेनिरुपाधिकस्वरूपकूं तथासोपाधिकस्वरूपकूं जानताहैं ॥ तहां आपणेनिरुपाधिकशुद्धस्वरूपकूंतौं प्रत्यक्रूपकरिकै तथाअविषयतारूपकरिकै जानताहै ॥ और आपणेसोपाधिकस्वरूपकूंतौं निरतिशयज्ञानऐश्वर्यादिकशक्तिमत्रूपकरिकै जानताहैं ॥ अन्यकोई देवता वाऋषि वादानव मनुष्य तिसतुमारेस्वरूपकूं जानतानहीं ॥ शंका ॥ हेअर्जुन अन्यदेवतादिकोंकरिकै जानणेकूं अशक्यस्वरूपकूं मैंपरमेश्वरभी कैसेजानूंगा ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाकूं निवृत्तकरताहुआ अर्जुन अत्यंतप्रेमकीउत्कंठाकरिकै श्रीभगवान्के बहुतसंबोधनोंकूं कथनकरेहै (हेपुरुषोत्तम) अर्थात् हेसर्वपुरुषोंविषेश्रेष्ठ ॥ तात्पर्ययह ॥ तुमारीअपेक्षाकरिकै दूसरेसर्वपुरुष अपकृष्टहींहै॥यातैं तिनदूसरेपुरुषोंकूं जोअर्थजानणेकूं अशक्यहै ॥ सोअर्थ सर्वतैंउत्तम तैंपरमेश्वरकूं जानणेकूंशक्यहींहैं इति ॥ अब परमेश्वरविषेकथनकऱ्याजोपुरुषोत्तमपणाहै तिसपुरुषोत्तमपणेकूं पुनःच्यारिसंबोधन करिकै प्रतिपादनकरेहैं (हेभूतभावनइति) तहां सर्वभूतोंकूं जो उत्पन्नकरेहै ताकानाम भूतभावनहै ॥ अर्थात् हेसर्वभूतोंकेपिता ॥ तहां इसलोकविषे कोईक पुरुष पिताहुआभी पुत्रादिकोंकानियंताहोतानहीं ॥ तैसेपरमेश्वरभी तिनसर्वभूतोंकापिताहुआभी तिनसर्वभूतोंका नियंतानहींहोवैंगा ॥ किंतु तापरमेश्वरतौं भिन्नहीं कोई तिनभूतोंकानियंताहोवैंगा ॥ ऐसीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै अर्जुन तापरमेश्वरका अन्यसंबोधन कहेहै (हेभूतेशइति) अर्थात् हेसर्वभूतोंके नियंता ॥ तहां इसलोकविषे कोईकराजादिकपुरुष आपणीप्रजादिकोंकेनियंताहुएभी तिनप्रजादिकोंकरिकै आराधन करणेयोग्यहोतेनहीं ॥ तैसे सोपरमेश्वरभी तिनसर्व भूतोंका नियंताहुआभी तिनसर्वभूतोंकरिकै आराधनकरणेयोग्यनहीं होवैंगा ॥ किंतु तापरमेश्वरतैं भिन्नहींकोई आराधनकरणेयोग्यहोवैंगा ॥ ऐसीशंकाके निवृत्तकरणेवासतैं अर्जुन तापरमेश्वरका अन्यसंबोधनकरेहै (हेदेवदेवइति) तहां सर्वप्राणीयोंकरिकै आराधन करणेयोग्य जेइंद्रादिकदेवताहैं तिनइंद्रादिकेदेवतावोंकरिकैभी जोआराधनकऱ्याजावैहै ताकानाम देवदेवहै ॥ अर्थात् हेदेवतावोंतैं आदिलेकेसर्वप्राणीयोंकरिकै आराधन करणेयोग्य ॥ तहां इसलोकविषे कोईक पुरुष

आराधनकरणेयोग्यहुआ भी पालनकर्त्तारूपकरिकै पतिहोतानहीं ॥ तैसे सोपरमेश्वरभी आराधनकरणेयोग्यहुआभी पालनकर्त्तारूपकरिकै पतिनहीं होवैंगा ॥ किंतु तिसपरमेश्वरतैंभिन्नहींकोई इसजगत्कापतिहोवैंगा॥ऐसीशंकाके निवृत्तकरणेवासतै अर्जुन तिसपरमेश्वरका अन्यसंबोधन कहेहै (हेजगत्पतेइति) अर्थात् अधिकारीजनोंकेप्रति हितकाउपदेशकरिकै शुभकर्मोंविषे प्रवृत्तकरणेहारा तथाअहितकाउपदेशकरिकै अशुभकर्मोंतैंनिवृत्तकरणेहारा ऐसाजोदेवहै तादेवकूं सृष्टिकेआदिकालविषे उत्पन्नकरिकै आपहीं इससर्वजगत्कूंपालनकरतेहो ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ इसप्रकारकेसर्वविशेषणोंकरिकै विशिष्ट आपपरमेश्वरहीं सर्वप्राणीयोंकेपिताहो ॥ तथासर्वप्राणीयोंकेगुरुहो तथासर्वप्राणीयोंकेराजाहो ॥ इसकारणतैंहीं आपसर्वप्रकारकरिकै सर्व प्राणीयोंकूंआराधनकरणेयोग्यहो ॥ ऐसेमहान्प्रभाववालेआपविषे पुरुषोत्तम पणाहै याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥१५॥ ❁ ॥ हेभगवन् जिसकारणतैं आपपरमेश्वरकी विभूतियोंकूं अन्यकोई भी देवता वाऋषि वादानव वामनुष्यजानिसकतानहीं ॥ और तेआपकी विभूतियां हमारेकूं अवश्यकरिकै जानीयांचाहिये ॥ तिसकारणतैं तेआपकीविभूतियां आपहीं हमारेप्रति विस्तारतैंकथनकरो इसप्रकारकीप्रार्थना अर्जुनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) वक्तुमर्हस्यशेषेणदिव्याह्यात्मविभूतयः। याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वंव्याप्यतिष्ठसि ॥१६॥ वक्तुम्।अर्हसि।अशेषेण। दिव्याः। हि। आत्मविभूतयः। याभिः। विभूतिभिः। लोकान्। इमान्। त्वम्। व्याप्य। तिष्ठसि ॥ १६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेभगवन् जिन विभूतियोंकरिकै इन सर्वलोकोंकूं व्याप्यकरिकै तुम स्थितहो तेविभूतियां जिसकारणतैंदिव्यहैं तिसकारणतैं आपहीं तेसमग्र आपणीविभूतियां कहणेकूं योग्यहो ॥ १६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् जिन आपणीविभूतियोंकरिकै आप इसमनुष्यलोकतैं आदिलैकेब्रह्मलोकपर्यंत सर्वलोकोंकूंव्याप्तकरिकै स्थितहो ॥ तेआपकी असाधारण विभूतियां जिसकारणतैं दिव्यहैं ॥ अर्थात् अस्मदादिकअसर्वज्ञपुरुषोंनैं आपेहीं जानणेकूंअशक्यहैं ॥ तथा अवश्यकरिकै जानीयांचहीये ॥ तिसकारणतैं आप सर्वज्ञहीं तेआपणीसमग्रविभूतियां कहणेकूंयोग्यहो इति ॥ १६ ॥ ❁ ॥ शंका ॥ हेअर्जुन लोकविषे प्रयोजनतैंविना किसीभीचेतन प्राणीकी प्रवृत्तिहोतीनहीं ॥ किंतु किसीप्रयोजनकाउद्देशकरिकैहीं सर्वप्राणीयोंकी प्रवृत्तिहोवैहै ॥ यातैं तिनविभूतियोंकेजानणेकरिकै तुमारा जोप्रयोजन सिद्धहोताहोवै ॥ सोआपणा प्रयोजन तूं प्रथम हमारेप्रति कथनकर ॥ पश्चात् मैं तुमारेताई तेंआपणीविभूतियां कथनकरौंगा ॥ ऐसीश्रीभगवान्कीशंकाकेहुए ॥ अर्जुन दोश्लोकोंकरिकै ताआपणेप्रयोजनकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) कथंविद्यामहंयोगिंस्त्वांसदापरिचिंतयन् ॥ केषुकेषुचभावेषुचिंत्योसिभगवन्मया ॥ १७ ॥ कथम् । विद्याम् । अहं । योगिन् । त्वाम् । सदा । परिचिंतयन् । केषु । केषु । च । भावेषु । चिंत्यः । असि । भगवन् । मया ॥ १७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेयोगिन् मैंस्थूलबुद्धिवालाअर्जुन सर्वदा तुमारांध्यानकरताहुआ तुमारेकूं किसप्रकारतें जांनउ हेभगवन् किनं किनं वस्तुवोंविषे मैंअर्जुननैं तूंपरमेश्वर चिंतनकरणेयोग्यहै ॥ १७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेयोगिन् ईहां निरतिशयऐश्वर्यादिकशक्तिकानाम योगहै ॥ सोयोग जिसविषेविद्यमानहोवै ताकानाम योगिन्है ॥ अर्थात् हेनिरतिशयऐश्वर्यादिक शक्तिवाला कृष्णभगवान् ॥ अत्यंतस्थूलबुद्धिवाला मैंअर्जुन सर्वकालविषे तुमाराध्यानकरताहुआ देवादिकोंकरिकैभी जानणेकूं अशक्य तैंपरमेश्वरकूं किसप्रकारतैं जानउ ॥ शंका ॥ हेअर्जुन हमारीविभूतियोंविषे मैंपरमेश्वरकूं ध्यानकरताहुआ तूं मैंपरमेश्वरकूं जानैंगा ॥ यहहीं हमारेजानणेकाप्रकारहै ॥ ऐसीश्रीभगवान्की शंकाकेहुए ॥ जिनविभूतियोंविषेस्थितआपका ध्यानकरताहुआ मैं आपकूंजानूंगा ॥ तिनविभूतियोंकूंहीं मैं प्रथम जानतानहीं ॥ इसप्रकारकेउत्तरकूं अर्जुन कथनकरैहै (केषुकेषुचभावेषुइति) हेभगवन् तुमारीविभूतिरूप किनकिन चेतनअचेतनरूपवस्तुवोंविषे मैं अर्जुन करिकै आप चिंतनकरणेयोग्यहो ॥ अर्थात् किनकिनविभूतियोंविषे मैंअर्जुन आपकाचिंतनकरूं इति ॥ १७ ॥ ❀ ॥ हेभगवन् जिनजिनविभूतियोंविषे आपचिंतनकरणेयोग्यहो ॥ तिनविभूतियोंकूं मैं अर्जुन जानतानहीं ॥ इसकारणतैं आपहीं कृपाकरिकै तिनआपणेविभूतियोंकूं कथनकरो ॥ इसप्रकारकीप्रार्थना अर्जुन करैहै ॥

(मू० श्लो०) विस्तरेणात्मनोयोगंविभूतिंचजनार्दन ॥ भूयःकथयतृप्तिर्हिशृण्वतोनास्तिमेऽमृतम् ॥ १८ ॥ विस्तरेण । आत्मनः । योगं । विभूतिं । च । जनार्दन । भूयः । कथय । तृप्तिः । हि । शृण्वतः । न । अस्ति । मे । अमृतम् ॥ १८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेजनार्दन आप आपणे योगकूं तथा विभूतिकूं पुनः विस्तारकरिकै कथनकरौ जिसकारणतैं तुमारेवचनरूप अमृतकूं श्रवणकरिकै पानकरतेहुए मैंअर्जुनकी तृप्ति नहीं होवैहै ॥ १८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेजनार्दन सर्वज्ञपणा तथासर्वशक्तिसंपन्नपणा इत्यादिकऐश्वर्यतारूपजोयोगहै ॥ तथा अधिकारीजनोंके ध्यानकाआलंबनरूपजाविभूतिहै ॥ ऐसे आपणेयोगकूं तथाविभूतिकूं आप पुनः विस्तारकरिकै कथनकरौ ॥ यद्यपि तिसआपणेयोगकूं तथाविभूतिकूं आप पूर्व सप्तमअध्यायविषे तथानवमअध्याय विषे संक्षेपतैंकथनकरिआयेहो ॥ तथापि अबी तिसयोगकूं तथाविभूतिकूं विस्तारकरिकैकथनकरो ॥ यहअर्थ अर्जुननैं (भूयः) इसशब्दकेकहणेकरिकैसूचन

कऱ्या ॥ और (हेजनार्दन) इससंबोधनकेकहणेकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्‌केप्रति यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ सर्वजनोंनैं स्वर्गादिकसुखोंकीप्राप्तिवासतै तथामोक्षकीप्राप्तिवासतै जिसकेप्रति याचनाकरीतीहै ताकानाम जनार्दनहै ॥ ऐसेआपजनार्दनकेआगे यहहमारीयाचनाभी उचितहै इति ॥ शंका ॥ हेअर्जुन पूर्वकथनकऱ्येहुएअर्थके पुनःकथनकरणेकीयाचना तूं किसवासतैकरताहैं ॥ पूर्वकथनकऱ्येहुएअर्थकापुनःकथनकरणा पीस्येहुएअन्नकूंपुनः पीसणेकीन्यांई संभवता नहीं ऐसीश्रीभगवान्‌कीशंकाकेहुए ॥ अर्जुन तापुनःकथनकरणेकीयाचनाविषे कारणकूंकहेहै (तृप्तिर्हिशृण्वतोनास्तिमेऽमृतमिति) हेभगवन् जिसकारणतैं अमृतकीन्यांई पदपदविषेस्वादुस्वादु ऐसेजेआपकेवचनहै ऐसेआपकेअमृतमयवचनोंकूं श्रवणइंद्रियरूपमुखकरिकै पानकरतेहुए मैंअर्जुनकी तृप्तिहोतीनहीं ॥ अर्थात् इनवचनोंकूंश्रवणकरिकै अबीमैं तृप्तहुआहुं याप्रकारकीअलंवुद्धिकरिकै तिनवचनोंकेश्रवणविषयक हमारीइच्छानिवृत्तहोतीनहीं ॥ तिसकारणतैं तिसआपणेयोगकूं तथाविभूतिकूं पुनःहमारेप्रति विस्तारतैंकथनकरौ इति ॥ १८ ॥ ❋ ॥ अब इसपूर्वउक्तअर्जुनकेप्रश्नकाउत्तर श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू॰श्लो॰) श्रीभगवानुवाच ॥ हंततेकथयिष्यामिदिव्याह्यात्मविभूतयः ॥ प्राधान्यतःकुरुश्रेष्ठनास्त्यंतोविस्तरस्यमे ॥ १९ ॥

हंत । ते । कथयिष्यामि । दिव्याः । हि । आत्मविभूतयः । प्राधान्यतः । कुरुश्रेष्ठ । न । अस्ति । अंतः । विस्तरस्य । मे । ॥ १९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेकुरुवंशविषेश्रेष्ठअर्जुन मैं अबी तुमारेतांई प्रसिद्ध तथादिव्य आपणीविभूतियां प्रधानताकरिकै कथनकरताहूं जिसकारणतैं मैंपरमेश्वरकीविभूतियोंके विस्तारका कोईपार नहीं है ॥ १९ ॥(इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ ईहां (हंत) यहशब्द इदानींकालकावाचकहै ॥ अर्थात् अबीहीं तेविभूतियां मैं तुमारेतांई कहताहूं ॥ अथवा हंत यहशब्द अनुमतिकावाचकहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकेआगे तुमनैं जिसअर्थकेजानणेकीप्रार्थनाकरीहै ॥ सोअर्थअवश्यकरिकै तुमारेतांई कथनकरूंगा ॥ तूं व्याकुलमतहोउ ॥ इसप्रकार अर्जुनकूं धैर्यदेकरिकै श्रीभगवान् तिसअर्थकेकथनकरणेका प्रारंभकरेहै ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकी जेअसाधारणविभूतियां दिव्यरूपकरिकै प्रसिद्धहैं ॥ तेआपणीविभूतियां मैंपरमेश्वर तैंअर्जुनकेतांई प्रधानताकरिकै कथनकरताहूं ॥ अर्थात्आपणीप्रधानप्रधानविभूतियोंकूं मैंकथनकरताहूं ॥ शंका ॥ हेभगवन्‌जितनीआपकी प्रधानरूप तथाअप्रधानरूप विभूतियांहै॥तेसर्वहींविभूतियां आप हमारेतांई कथनकरो ॥ केवल प्रधानप्रधानविभूतियोंकूं किसवासतैकथनकरतेहो ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तिनआपणेविभूतियोंकीअनंतताकूं कथनकरेहै (नास्त्यंतोविस्तरस्यमेइति) हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकी जितनीकी प्रधानरूप तथाअप्रधानरूप सर्वविभूतियांहै॥ तेसर्वविभूतियां कथनकरणेकूंअशक्यहैं ॥ जिसकारणतैं मैंपरमेश्वरके तिनविभूतियोंकेविस्तारका कोईअंतनहींहै ॥ अर्थात् सर्वविभूतियां इतनीहै याप्रकारकी

इयत्तासंख्यातैंरहितहै ॥ तिसकारणतैं प्रधानप्रधानभूत कोईकविभूतियांहीं मैंतुमारेतांई कथनकरताहूं इति ॥ १९ ॥ ❋ ॥ तहां तिनप्रधानप्रधानविभूतियों विषेभी जोप्रथम मुख्यवस्तु चिंतनकरणेयोग्यहै ॥ तिसकूं तूं श्रवणकर ॥

(मू० श्लो०) अहमात्मागुडाकेशसर्वभूताशयास्थितः ॥ अहमादिश्चमध्यंचभूतानामंतएवच ॥ २० ॥ अहम् । आत्मा । गुडाकेश । सर्वभूताशयस्थितः । अहम् । आदिः । च । मध्यं । च । भूतानाम् । अंतः । एव । च ॥२०॥(इतिपदच्छेदः)॥ हेगुडाकेशअर्जुन सर्व भूतोंकेहृदयदेशविषेस्थित चैतन्यआनंदघन मैंहींहूं तथा मैंपरमेश्वरहीं सर्वभूतोंका उत्पत्तिहूं तथा स्थितिहूं तथा विनाशहूं ॥ २० ॥ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेगुडाकेशअर्जुन सर्वप्राणीयोंकेहृदयदेशविषे अंतर्यामिरूपकरिकै तथाप्रत्यक्आत्मारूपकरिकै स्थितजोचैतन्यस्वरूप आनंदघन परमात्मादेवहै ॥ सो परमात्मावासुदेव मैंहींहूं ॥ इसप्रकारतैं अभेदरूपकरिकै तुमनैं मैंपरमेश्वरकाध्यानकरणा ॥ ईहां (हेगुडाकेश) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थसूचनकऱ्या॥ गुडाकानाम निद्राकाहै॥ तानिद्राकूं जोआपणेवशकरेहै ताकानाम गुडाकेशहै ॥ ऐसा निद्रादिकविकारोंकूं आपणेवशकरणेहारा तूंअर्जुन अभेदरूपकरिकैमैंपरमेश्वर केध्यानकरणेविषेसमर्थहैं इति ॥ इतनैंकरिकै उत्तमअधिकारीपुरुषोंकेध्यानकाप्रकार कथनकऱ्या ॥ अब मध्यमअधिकारीपुरुषोंकेध्यानकाप्रकार निरूपणैंकरहै (अहमादिःइति) हेअर्जुन इसप्रकारतैं अभेदरूपकरिकै मैंपरमेश्वरकेध्यानकरणेविषे जोतूं समर्थनहींहोवैं ॥ तौं आगेकथनकरणेयोग्यध्यान तुमारेकूं करणेयोग्यहै ॥ तिनवक्ष्यमाणध्यानोंविषेभी प्रथम जोवस्तु ध्यानकरणेयोग्यहै तिसकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै (अहमादिःइति) हेअर्जुन लोकविषे चेतनरूपकरिकैप्रसिद्ध जितनें कीप्राणीहै ॥ तिनसर्वप्राणीयोंका मैं परमेश्वरहीं उत्पत्तिहूं ॥ तथा मैंपरमेश्वरहीं तिनसर्वप्राणीयोंकी स्थितिहूं ॥ तथा मैंपरमेश्वरहीं तिनसर्वप्राणीयोंकाविनाशहूं ॥ अर्थात् तिनसर्वप्राणीयोंकी उत्पत्तिस्थितिनाशरूपकरिकै तथातिनसर्वप्राणीयोंका कारणरूपकरिकै मैंपरमेश्वरहीं तुमारेकूं ध्यानकरणेयोग्यहूं ॥ इतनैंकरिकै मध्यमअधिकारीपुरुषोंकेध्यानकाप्रकार कथनकऱ्या इति ॥ २० ॥ ❋ ॥ हेअर्जुन इसप्रकारकेध्यानकरणेविषेभी जोतूं समर्थनहींहोवैं ॥ तौं आगेकथनक रणेयोग्य बाह्यध्यानहीं तुमारेकूं करणेयोग्यहै ॥ इसप्रकारकेअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् मंदअधिकारी पुरुषोंऊपरि अनुग्रहकरिकैं तिनबाह्यध्यानोंकूं इसदशम अध्यायकीसमाप्तिपर्यंत विस्तारतैं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) आदित्यानामहंविष्णुर्ज्योतिषांरविरंशुमान् ॥ मरीचिर्मरुतामस्मिनक्षत्राणामहंशशी ॥ २१ ॥ आदित्यानाम् । अहं ।

विष्णुः । ज्योतिषां । रविः । अंशुमान् । मरीचिः । मरुताम् । अस्मि । नक्षत्राणाम् । अहं । शशी ॥२१॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन आदित्योंकेमध्यमै विष्णुनामाआदित्य मैंपरमेश्वर हूं तथा प्रकाशकोंकेमध्यमै व्यापकप्रकाशवाला रवि मैंहूं तथा मरुद्गणोंके मध्यमै मरीचिनामामरुत् मैंहूं तथा नक्षत्रोंकेमध्यमै चंद्रमा मैंहूं ॥ २१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन द्वादशआदित्योंकेमध्यमै विष्णुनामाआदित्य मैंहूं॥अथवा विष्णुकहीये वामनअवतार मैंहूं ॥ तथा अग्नितैंआदिलैके जितनैंकीप्रकाशकरणेहारेहैं तिनसर्वप्रकाशकोंकेमध्यविषे सर्वविश्वविषे व्यापकहैप्रकाशजिसका ऐसाजोसूर्यहै सोमैंहूं ॥ तथा मरुत्नामाजेओगणपंचास देवताविशेषहैं तिनमरुतोंकेमध्यमै मरीचिनामामरुत् मैंहूं ॥ तथा अश्विनीतैंआदिलैकेजितनैंकी आकाशाविषेस्थित तारागणरूपनक्षत्रहैं तिनसर्वनक्षत्रोंकेमध्यविषे तिनसर्वनक्षत्रोंकाअधिपतिचंद्रमा मैंहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ तेद्वादशसूर्य तथाअग्निआदि सर्वज्योति तथा ओगणपंचासमरुद्गण तथा अश्विनीआदिकसर्वनक्षत्र यहसर्वहीं यद्यपि सामान्यरूपतैं मैंपरमेश्वरकीहीं विभूतिहैं ॥ तथापि तिनोंकेमध्यविषे विष्णुनामाआदित्य तथारविनामाज्योति तथामरीचिनामामरुत् तथाचंद्रमानामानक्षत्र यहसर्वप्रभावकीअधिकताकरिकै हमारी विशेषविभूतिहैं ॥ यातैं तिनद्वादशआदित्योंविषे विष्णुनामाआदित्य परमेश्वरहींहै याप्रकार मैंपरमेश्वरकीबुद्धिकरिकै सोविष्णुनामाआदित्य इनअधिकारीपुरुषोंने ध्यानकरणेयोग्यहै ॥ इसप्रकारतैंहीं रविमरीचि चंद्रमा यहतीनों मैंपरमेश्वररूपकरिकै ध्यानकरणेयोग्यहैं ॥ यहध्यानकीरीतिइसदशमअध्यायकीसमाप्तिपर्यंत सर्वपर्यायोंविषे जानिलेणी इति ॥ ईहां यद्यपि वामन राम इत्यादिक साक्षात् परमेश्वरकेअवतारहींहैं ॥ तथा सर्वऐश्वर्यतावालेहैं ॥ आदित्यादिकोंकीन्यांई परमेश्वरकीविभूतिरूपनहींहैं ॥ तथापि जैसे (वृष्णीनांवासुदेवोस्मि) इसवक्ष्यमाणवचनविषे श्रीभगवाननैं तिसवासुदेवरूपतैं परमेश्वरकेध्यानकरावणेवासतैं आपणाभी तिनविभूतियोंविषेहीं पठनकऱ्याहै ॥ तैसे वामनरामादिकोंकाभी तिसतिसरूपतैं परमेश्वरकेध्यानकरावणेवासतैं श्रीभगवान्‌नैं आपणीविभूतियोंविषेहीं पठनकऱ्याहै ॥ इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) वेदानांसामवेदोस्मिदेवानामस्मिवासवः ॥ इंद्रियाणांमनश्चास्मिभूतानामस्मिचेतना ॥ २२ ॥ वेदानाम् । सामवेदः । अस्मि । देवानाम् । अस्मि । वासवः । इंद्रियाणाम् । मनः । च । अस्मि । भूतानाम् । अस्मि । चेतना ॥२२॥ (इतिप०) ॥ हेअर्जुन वेदोंकेमध्यमै सामवेद मैंहूं तथा देवतावोंकेमध्यमैं इंद्र मैं हूं तथा इंद्रियोंकेमध्यमैं मन मैं हूं तथा भूतोंकेमध्यमै चेतना मैं हूं ॥ २२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका॥हेअर्जुन ऋग् यजुष् साम अथर्वण इनच्यारिवेदोंकेमध्यविषे गायनकीमधुरताकरिकै अत्यंतरमणीकजोसामवेदहै सोसामवेद मैंहूं।।तथा अग्निवायुआदिसर्वदेवताओंके मध्यविषे तिनसर्वदेवतावोंकाअधिपतिजोइंद्रहै सोइंद्र मैंहूं तथा चक्षु श्रोत्र त्वक् रसन घ्राण वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु मन इनएकादशइंद्रियोंके मध्यविषे सर्वइंद्रियोंकाप्रवर्त्तकजोमनहै ॥ सोमन मैंहूं ॥ तथा सर्वप्राणियोंकेसंबंधी जितनैंकीपरिणामहैं तिनोंकानामभूतहै ॥ ऐसेपरिणामरूपभूतोंकेमध्यविषे चैतन्यकीअभिव्यक्तिकरणेहारीजाबुद्धिकीवृत्तिरूपचेतनाहै साचेतना मैंहूं इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू०श्लो०) रुद्राणांशंकरश्चास्मिवित्तेशोयक्षरक्षसाम् ॥ वसूनांपावकश्चास्मिमेरुःशिखरिणामहम् ॥ २३ ॥ रुद्राणां । शंकरः । च । अस्मि । वित्तेशः । यक्षरक्षसां । वसूनां । पावकः । च । अस्मि । मेरुः । शिखरिणाम् । अहम् ॥२३॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन रुद्रोंकेमध्यमै शंकर मैंहूं तथा यक्षराक्षसोंकेमध्यमैं कुबेर मैंहूं तथा वसुवोंके मध्यमै अग्नि मैं हूं तथा रत्नोंवालेपर्वतोंकेमध्यमै सुमेरु मैंहूं ॥ २३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन एकादशरुद्रोंकेमध्याविषे आपणेभक्तजनोंकेतांई निरातिशय मोक्षरूपआनंदकीप्राप्तिकरणेहारा जोशंकरनामारुद्रहै सोशंकर मैंहूं ॥ तथा यक्षोंकेतथाराक्षसोंकेमध्यविषे संपूर्णधनकाअधिपतिजोकुबेरहै सोकुबेरमैंहूं ॥ तथा अष्टवसुवोंकेमध्यविषे अत्यंतश्रेष्ठजोअग्निहै सोअग्निमैंहूं ॥ तथा नानाप्रकारके रत्नरूपशिखरोंवाले जितनैंकीपर्वतहैं तिनसर्वशिखरीयोंकेमध्यविषे सुवर्णमयअत्यंतरमणीयजोसुमेरुहै सोसुमेरु मैंहूंइति ॥ २३ ॥ ❀ किंच ॥

(मू०श्लो०) पुरोधसांचमुख्यंमांविद्धिपार्थबृहस्पतिम् ॥ सेनानीनामहंस्कंदःसरसामस्मिसागरः ॥२४॥ पुरोधसां । च । मुख्यं । मां । विद्धि । पार्थ । बृहस्पतिं । सेनानीनाम् । अहं । स्कंदः । सरसाम् । अस्मि । सागरः ॥२४॥ (इतिपदच्छेदः)॥हेअर्जुन सर्वपुरोहितोंकेमध्यमै तूं मैंपरमेश्वरकूं सर्वतैंश्रेष्ठ बृहस्पतिरूप जान तथा सेना पतियोंके मध्यमैं स्कंद मैं हूं तथा जलाशयोंके मध्यमै सागर मैं हूं ॥ २४ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ सर्व राजावोंविषे त्रिलोकीकापति देवराज इंद्र श्रेष्ठहै ॥ ऐसे देवराज इंद्रकाभीपुरोहितजो बृहस्पतिहै सोबृहस्पति सर्वराजावोंकेपुरोहितोंतैंश्रेष्ठहैं ॥ यातैं तिनसर्वपुरोहितोंकेमध्यविषे मैंपरमेश्वरकूं तूं बृहस्पति रूपजान ॥ तथा सर्वसेनापतियोंकेमध्यविषे देवतावोंकासेनापतिजो स्कंदहै सोस्कंद मैंहूं ॥ तथा देवतावोंने खोयेहुए जितनैंकी जलकेरहणेकेस्थानहैं तिनजलाशयरूप सरोवरोंकेमध्यविषे सगरकेपुत्रोंनैं खोयाहुआजोसागरहै सोसागरमैंहूं इति॥ २४ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) महर्षीणांभृगुरहंगिरामस्म्येकमक्षरम् ॥ यज्ञानांजपयज्ञोस्मिस्थावराणांहिमालयः॥ २५ ॥ महर्षीणां । भृगुः । अहं । गिराम् । अस्मि । एकम् । अक्षरं । यज्ञानां । जपयज्ञः । अस्मि । स्थावराणाम् । हिमालयः ॥ २५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन महाऋषियोंके मध्यमें भृगूनामाऋषि मैंहूं तथा सर्वगिरावोंकेमध्यमै ओंकाररूप एक अक्षर मैंहूं तथा सर्वयज्ञोंकेमध्यमै जपरूपय ज्ञ मैं हूं तथा सर्वस्थावरोंकेमध्यमै हिमालयपर्वत मैंहूं ॥ २५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ब्रह्माकेपुत्ररूप जितनैंकीमहाऋषिहै ॥ तिनसर्व महाऋषियोंके मध्यविषे अत्यंततेजस्वी जोभृगुऋषिहै सोभृगुऋषि मैंहूं ॥ तथा अर्थकेवाचक पदरूप जितनीकी गिराहै तिनसर्व गिरावोंकेमध्यविषे ब्रह्मकावाचक जोएक अक्षररूप ओंकारपदहै सोओंकार मैंहुं ॥ तथा अश्वमेध ज्योतिष्टोम इसतैंआदिलेके जितनैंवेदविषेयज्ञकथनकऱ्ये हैं ॥ तिनसर्वयज्ञोंकेमध्यविषे हिंसादिकसर्वदोषोंतैंरहितहोणेतैं अत्यंतशुद्धिकरणेहाराजोजपरूपयज्ञहैं ॥ सोजपरूपयज्ञ मैंहुं ॥ तथा इसलोकविषे चलायमानतातैंरहित जितनैंकीस्थितिवाले स्थावरपदार्थहैं ॥ तिनसर्वस्थावरपदार्थोंकेमध्यविषे हिमालयपर्वत मैंहुं इति ॥ २५ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) अश्वत्थःसर्ववृक्षाणांदेवर्षीणांचनारदः ॥ गंधर्वाणांचित्ररथःसिद्धानांकपिलोमुनिः ॥ २६ ॥ अश्वत्थः । सर्ववृक्षाणां । देवर्षीणां । च । नारदः । गंधर्वाणां । चित्ररथः । सिद्धानां । कपिलः । मुनिः॥२६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सर्ववृक्षोंकेमध्यमै पिप्पलवृक्षमैंहूं तथा सर्वदेवऋषियोंकेमध्यमै नारद मैंहूं तथा सर्वगंधर्वोंकेमध्यमै चित्ररथ नामागंधर्व मैंहुं तथा सर्वसिद्धोंकेमध्यमै कपिल मुनि मैंहूं ॥ २६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन वनस्पतिरूप जितनैंकीवृक्षहैं तिनसर्ववृक्षोंकेमध्यविषे पिप्पलनामा वृक्षमैंहूं ॥ तथा जेदेवताहुएहीं वेदमंत्रोंकेदर्शनकरिकैऋषिभावकूंप्राप्तहूएहैं तिनोंकानाम देवऋषिहै ॥ ऐसेदेवऋषियोंकेमध्यविषे नारदनामादेवऋषि मैंहूं ॥ तथा गायनकरणेहारे जितनैंकी गंधर्वहैं तिनसर्वगंधर्वोंकेमध्यविषे चित्ररथ नामा गंधर्व मैंहूं ॥ तथा जेपुरुष विनाहीं प्रयत्नतैं जन्ममात्रकरिकैहीं धर्म ज्ञान वैराग्य ऐश्वर्यता इत्यादिकगुणोंकूंप्राप्तहुएहोवे तथानिश्चयकऱ्याहैपरमार्थ वस्तुजिनोंनैं तिनपुरुषोंकानामसिद्धहै ऐसेसिद्धोंकेमध्यविषे कपिलमुनिनामासिद्ध मैंहूं इति ॥ २६ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) उच्चैःश्रवसमश्वानांविद्धिमाममृतोद्भवम् ॥ ऐरावतंगजेंद्राणांनराणांचनराधिपम् ॥ २७ ॥ उच्चैःश्रवसम् । अश्वानां । विद्धि । माम् । अमृतोद्भवम् । ऐरावतम् । गजेंद्राणाम् । नराणाम् । च । नराधिपम् ॥ २७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन

सर्वअश्वोंकेमध्यमैं अमृतकेमथनकरणेकालविषेउद्भवहुआ उच्चैःश्रवसनामाअश्व मेरेकूं तूंजान तथासर्वगजोंकेमध्यमैं ऐरावतनामा गज मेरेकूंजान तथा सर्वनरोंकेमध्यमें राजारूप मेरेकूंजान ॥ २७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वअश्वोंकेमध्यविषे अत्यंतश्रेष्ठ जोउच्चैःश्रवसनामाअश्वहै ॥ जोउच्चैःश्रवसनामाअश्व अमृतकीप्राप्तिवासतै देवतावोंनैं तथादैत्योंनैं मथन कीयेहुएसमुद्रतैं प्रगटहोताभयाहै ऐसाउच्चैःश्रवसनामाअश्व मेरेकूं तूंजान ॥ तथा सर्वगजोंकेमध्यविषे ऐरावतनामागज मेरेकूंतूंजान ॥ जोऐरावतनामागज अमृत कीप्राप्तिवासतै देवतादैत्योंनैं मथनकऱ्येहुएसमुद्रतैं प्रगटहोताभयाहै ॥ तथा सर्वनरोंकेमध्यविषे सर्वप्रजाकूं धर्मविषेप्रवृत्तकरणेहारा तथाअधर्मतैंनिवृत्तकरणेहारा जोराजाहै सोराजा मेरेकूंतूंजान इति ॥ २७ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) आयुधानामहंवज्रंधेनूनामस्मिकामधुक् ॥ प्रजनश्चास्मिकंदर्पःसर्पाणामस्मिवासुकिः ॥ २८ ॥ आयुधानाम् । अहम् । वज्रम् । धेनूनाम् । अस्मि । कामधुक् । प्रजनः । च । अस्मि । कंदर्पः । सर्पाणाम् । अस्मि । वासुकिः ॥२८॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सर्वआयुधोंकेमध्यमैं वज्र मैं हूं तथा सर्वधेनुवोंकेमध्यमैं कामधेनु मैंहूं तथा सर्वकामोंकेमध्यमैं पुत्रकीउत्पत्तिअर्थ काम मैं हूं तथा सर्वसर्पोंकेमध्यमै वासुकिनामासर्प मैं हूं ॥ २८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ अस्त्ररूपजितनैंकीआयुधहैं तिनसर्वआयुधोंकेमध्यविषे दधीचिकेअस्थियोंतैउत्पन्नहुआजोवज्रहैं सोवज्र मैंहूं ॥ तथा दुग्धकीप्राप्तिकरणेहारी जितनी कीधेनुहैं ॥ तिनसर्वधेनुवोंकेमध्यविषे मनवांछितकामोंकीप्राप्तिकरणेहारी तथासमुद्रकेमथनतैंप्रगटहुई जावसिष्ठकीकामधेनुहै साकामधेनू मैंहूं ॥ तथा मैथुनकीअभिलाषारूप सर्वकामोंकेमध्यविषे पुत्रकीउत्पत्तिवासतै जोकामरूपकंदर्पहै सोकामरूपकंदर्प मैंहूं ॥ ईहां (प्रजनश्च) इसवचनविषेस्थितजोचकारहै ॥ सोचकार पुत्रकीउत्पत्तितैंविना व्यर्थमैथुनकेहेतुरूपकामकीनिवृत्तिकूंबोधनकरेहै ॥ तथा सर्वसर्पोंकेमध्यविषे तिनसर्वसर्पोंकाराजाजोवासुकिहै सोवासुकि मैंहूं ॥ ईहां सर्पजातितैं नागजातिभिन्नहोवैहै ॥ तहां सर्पतौं विषवालेहोवैहैं ॥ और नाग विषतैंरहितहोवैहैं इतनादोनोंविषेभेदहोवैहै ॥ यातैं (अनंतश्चास्मिनागानाम्) इसवक्ष्यमाणवचनविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ २८ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) अनंतश्चास्मिनागानांवरुणोयादसामहम् ॥ पितॄणामर्यमाचास्मियमःसंयमतामहम् ॥ २९ ॥ अनंतः । च । अस्मि । नागानाम् । वरुणः । यादसाम् । अहं । पितॄणाम् । अर्यमा । च । अस्मि । यमः । संयमताम् । अहम् ॥२९॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन नागोंके मध्यमै अनंतनाग मैं हूं तथा जलचरोंकेमध्यमै वरुण मैंहूं तथा पितरोंकेमध्यमै अर्यमा मैंहुं तथा नियमनकरणे हाऱ्योंकेमध्यमै यम मैंहुं ॥ २९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वनागोंकेमध्यविषे तिनसर्वनागोंकाराजारूप जोशेषनामा अनंतनागहै सोअनंतनाग मैंहूं ॥ तथा जलविषेविचरणेहारे सर्वजीवोंकेमध्यविषे तिनसर्वजलचारीजीवोंकाराजारूप जोवरुणहै सोवरुण मैंहूं ॥ तथा सर्वपितरोंकेमध्यविषे तिनसर्वपितरोंकाराजारूप जोअर्यमानामा पितरहै सोअर्यमा मैंहूं ॥ तथा धर्मअधर्मकेसुखदुःखरूपफलकीप्राप्तिकरिकै अनुग्रहनिग्रहरूप संयमकूंकरणेहारे जितनैंकी समर्थपुरुषहैं ॥ तिनसर्वनियमनकर्त्तावोंकेमध्यविषे यम मैंहूं इति ॥ २९ ॥ ❁ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) प्रह्लादश्चास्मिदैत्यानांकालःकलयतामहम् ॥ मृगाणांचमृगेंद्रोहंवैनतेयश्चपक्षिणाम् ॥ ३० ॥ प्रह्लादः । च । अस्मि । दैत्यानां । कालः । कलयताम् । अहं । मृगाणां । च । मृगेंद्रः । अहं । वैनतेयः । च । पक्षिणाम् ॥ ३० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन दैत्योंके मध्यमै प्रल्हाद मैं हूं तथा संख्यागणनकरणेहाऱ्योंकेमध्यमै काल मैंहूं तथा मृगादिकपशुवोंकेमध्यमै सिंह मैंहूं तथा सर्वपक्षीयोंकेमध्यमै गरुड मैंहूं ॥ ३० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन दितिकेवंशविषे उत्पन्नभयेजितनैंकीदैत्यहैं ॥ तिनसर्वदैत्योंकेमध्यविषे आपणेसात्विकस्वभावकरिकै सर्वप्राणीयोंकूं अतिशयकरिकै आनंदकी प्राप्तिकरणेहारा जोप्रल्हादहै सोप्रल्हाद मैंहूं ॥ तथा जितनैंकीसंख्याकेगणनकरणेहारेहैं तिनसर्वोंकेमध्यविषे काल मैंहूं ॥ तथा मृगतैंआदिलैकेजितनैंकीपशुहैं ॥ तिनमृगादिकसर्वपशुवोंकेमध्यविषे तिनसर्वपशुवोंकाराजाजोसिंहहै सोसिंह मैंहूं ॥ तथा सर्वपक्षीयोंकेमध्यविषे तिनसर्वपक्षीयोंकाराजारूप तथाविनताकापुत्र जोगरुडहै सोगरुड मैंहूं इति ॥ ३० ॥ ❁ ॥ किंच ॥

(मू०श्लो०) पवनःपवतामस्मिरामःशस्त्रभृतामहम् ॥ झषाणांमकरश्चास्मिस्रोतसामस्मिजाह्नवी ॥ ३१ ॥ पवनः । पवताम् । अस्मि । रामः । शस्त्रभृताम् । अहं । झषाणां । मकरः । च । अस्मि । स्रोतसाम् । अस्मि । जाह्नवी ॥ ३१ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन वेगवाल्योंकेमध्यमै वायु मैं हूं तथा शस्त्रधारीयोंकेमध्यमै राम मैंहूं तथा मत्स्योंकेमध्यमै मकर मैं हूं तथा नदीयोंकेमध्यमैं श्रीगंगाजी मैंहूं ॥ ३१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जितनैंकीपावनकरणेहारेपदार्थहैं अथवा जितनैंकीवेगवालेपदार्थहैं ॥ तिनसर्वोंकेमध्यविषे पवन मैंहूं ॥ तथा युद्धविषेअत्यंतकुशल जितनैंकी शस्त्रोंकेधारणकरणेहारे योद्धाहैं ॥ तिनसर्वोंकेमध्यविषे सर्वराक्षसोंकेकुलकानाशकरणेहारा परमशूरवीर जोदशरथकापुत्र श्रीरामहै सोराम मैंहूं ॥ तथा सर्वमत्स्यों केमध्यविषे मकरनामामत्स्य मैंहूं ॥ तथा वेगकरिकैचलायमानहैजलजिनोंविषे ऐसीजे यमुनागोदावरी आदिकसर्वनदीयांहैं ॥ तिनसर्वनदीयोंकेमध्यविषे तिनसर्व नदीयोंतैंअत्यंतश्रेष्ठ श्रीगंगाजी मैंहूं इति ॥ ३१ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) सर्गाणामादिरंतश्चमध्यंचैवाहमर्जुन ॥ अध्यात्मविद्याविद्यानांवादःप्रवदतामहम् ॥ ३२ ॥ सर्गाणाम् । आदिः । अंतः । च । मध्यं । च । एव । अहम् । अर्जुन । अध्यात्मविद्या । विद्यानाम् । वादः । प्रवदताम् । अहम् ॥ ३२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥ हेअर्जुन अचेतनरूपकार्योंका उत्पत्ति तथा स्थिति तथा लय मैंपरमेश्वर हींहूं तथासर्वविद्याओंकेमध्यमै अध्यात्मविद्या मैंहूं तथा विवादकर्त्तापुरुषोंकीकथावोंकेमध्यमै वादनामाकथा मैंहूं ॥ ३२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अचेतनरूपकरिकैप्रसिद्ध जितनैंकीउत्पत्तिमानकार्यहैं तिनसर्वकार्योंका उत्पत्ति तथास्थिति तथालय मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ यद्यपि (अहमादिश्च मध्यंचभूतानामंतएवच) इसवचनविषे पूर्वभी श्रीभगवान्नैं आपणेकूं सर्वभूतोंका उत्पत्तिस्थितिलयरूप कथनकऱ्याथा ॥ तथापि पूर्वतौं चेतनरूपकरिकैप्रसिद्धभू तोंकीहीं उत्पत्तिस्थितिलयरूपता कथनकरीथी ॥ और अबीईहां अचेतनरूपकरिकैप्रसिद्धभूतोंकी उत्पत्तिस्थिति लयरूपता कथनकरीहै ॥ यातैं ईहां पुनरुक्तिदो षकी प्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ तथा सर्वविद्यावोंकेमध्यविषे मोक्षकेप्राप्तिकाहेतुरूप तथाजीवब्रह्मके अभेदकाप्रतिपादक ऐसीजाउपनिषदरूप अध्यात्मविद्याहै ॥ साअध्यात्मविद्यामैंहूं ॥ तथा परस्परविवादकर्त्ता पुरुषोंकीजा वाद जल्प वितंडा यहतीनप्रकारकीकथाहैं ॥ तिनकथावोंकेमध्यविषे वादनामाकथा मैंहूं ॥ ईहां यद्यपि (प्रवदताम्) यहशब्द विवादकर्त्तापुरुषोंकाहीं वाचकहै ॥ तिनविवादकर्त्तापुरुषोंकीकथावोंकावाचकहैनहीं ॥ तथापि जैसे पूर्व (भूतानामस्मिचे तना) इसवचनविषे भूतानां इसशब्दकी तिनभूतसंबंधीपरिणामोंविषे लक्षणा अंगीकारकरीथी॥ तैसे ईहांभी प्रवदतां इसशब्दकी तिनविवादकर्त्तापुरुषसंबंधीकथावों विषे लक्षणाअंगीकारकरणी उचितहै ॥ तहां परस्पर रागद्वेषतैंरहित तथापरस्पर जयपराजयकीइच्छातैंरहित तथापरस्पर तत्त्वबोधनकरणेकीइच्छावाले ऐसेजे एकगुरुकेपासिअध्ययनकरणेहारेदोशिष्यहैं अथवा गुरुकेशिष्यदोनोंहैं ॥ तिनदोनोंकी जा तत्त्वनिर्णय पर्यंत परस्पर प्रश्नउत्तररूपकथाहै ताकानाम वादकथाहै॥ और वादकथाकाफलरूपजो तत्त्वनिर्णयहै ॥ तिसतत्त्वनिर्णयका प्रतिवादियोंकेखंडनकरिकै संरक्षणकरणेवासतै परस्पर जीतणेकीइच्छावालेदोपुरुषोंकी जो जय

पराजयमात्रपर्यंत परस्पर कथाहै ताकानाम जल्पकथाहै तथावितंडाकथाहै ॥ तहां छल जाति निग्रहस्थान इनतीनोंकारिकै परपक्षकूं दूषितकरणा इतनाअंशतौं जल्पकथाविषे तथावितंडाकथाविषे समानहींहोवैहै ॥ तथापि वितंडाकथाविषेतौं एकपुरुषनैं आपणेपक्षका केवलस्थापनहींकरीताहै ॥ परपक्षविषे दूषणदईता नहीं ॥ और अन्यपुरुषनैंतौं तिसपक्षविषे केवळ दूषणहींदयीताहै ॥ आपणेमतकास्थापनकरीतानहीं ॥ और जल्पकथाविषेतौं विवादकर्त्तादोनोंपुरुषोंनैं आपणाआपणापक्ष स्थापनभीकरीताहै ॥ तथा दोनोंनैं परपक्षकूं दूषितभीकरीताहै इतना जल्प वितंडाका परस्परभेदहै ॥ तहां अन्यअर्थकेअभिप्रायकरिकै उच्चारणकऱ्येहुएवचनका अन्यअर्थकल्पनाकरिकै तिसवक्तापुरुषकूं जोदूषणदेणाहै ताकानाम छलहै ॥ और असत्उत्तरकानाम जातिहै ॥ और पराजयकेहेतु कानाम निग्रहस्थानहै ॥ छल जाति निग्रहस्थान इनतीनोंका विभाग तथाउदाहरण न्यायग्रंथोंविषेप्रसिद्धहैं इति ॥ ३२ ॥ ❀ किंच ॥

(मू० श्लो०) अक्षराणामकारोस्मिद्वंद्वःसामासिकस्यच ॥ अहमेवाक्षयःकालोधाताहंविश्वतोमुखः ॥ ३३ ॥ अक्षराणाम् । अकारः । अस्मि । द्वंद्वः । सामासिकस्य । च । अहम् । एव । अक्षयः । कालः । धाता । अहं । विश्वतोमुखः॥३३॥(इतिप०)॥हेअर्जुन अक्षरोंके मध्यमै अकारअक्षर मैंहूं तथा समाससमूहकेमध्यमै द्वंद्वसमास मैंहूं तथा मैंपरमेश्वरहीं क्षयतैंरहित कालरूपहुं तथा सर्वफलप्रदातावोंके मध्यमैं सर्वकर्मोंकेफलकाप्रदाता अंतर्यामीईश्वर मैंहुं ॥ ३३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्ववर्णरूपअक्षरोंकेमध्यविषे । (अकारोवैसर्वावाक्) इसश्रुतितैं सर्ववाक्रूपकरिकैकथनकऱ्याजोअकारअक्षरहै सोअकारअक्षर मैंहुं ॥ तथा सर्वसमासोंकाजोसमूहहै ताकानाम सामासिकहै ॥ ऐसे समाससमूहकेमध्यविषे उभयपदार्थप्रधानजो रामकृष्णौ यहद्वंद्वसमासहै सोद्वंद्वसमास मैंहुं ॥ तहां उपकुंभं इत्यादिकअव्ययीभाव समासतौं पूर्वपदार्थप्रधानहोवैहै ॥ और राजपुरुषःइत्यादिकतत्पुरुषसमासतौं उत्तरपदार्थप्रधानहोवैहै ॥ और चित्रगु इत्यादिकबहुव्रीहिसमासतौं अन्यपदार्थप्रधानहोवैहै ॥ इसप्रकारतैं द्वंद्वसमासतैभिन्न कोईभीसमास उभयपदार्थप्रधानहोवैनहीं॥यातैं तिनसर्वसमासोंतैं सोद्वंद्वसमास उत्कृष्टहै ॥ और क्षणघटिकादिकनाशवान्कालकाअभिमानीरूप तथातिससर्वकालकूंजानणेहारा जोपरमेश्वरनामा अक्षयकालहै ॥ जिसपरमेश्वररूपअक्षयकालकूं (कालकालोगुणीसर्वविद्यः) इत्यादिकश्रुतियां कालकाभीकालरूपकरिकैप्रतिपादनकरेहैं ॥ सोअक्षयकालरूपभी मैंपरमेश्वरहींहुं ॥ यद्यपि (कालःकलयतामहम्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं पूर्वहीं आपणेकूं कालरूपताकथनकरीथी ॥ तथापि पूर्व श्रीभगवान्नै आपणेकूं नाशवान्कालरूपता कथनकरीथी ॥ और अबीईहां अक्षयकालरूपता कथनकरीहै ॥ यातैं इसवचनविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और कऱ्येहूएकर्मकेफलकीप्राप्तिकरणेहारेजितनैंकीराजादिकहैं ॥

तिनसर्वफलप्रदातावोंकेमध्यविषे सर्वकर्मोंकेफलप्रदाताजोईश्वरहै सोअंतर्यामीईश्वरमैंहूं ॥ ईहांकिसीटीकाविषेतौं (द्वंद्वःसामासिकस्यच) इसवचनका यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ वेदमंत्रोंकेअर्थका कथनकरणेवासतै जो विद्वान्पुरुषोंका अथवा गुरुशिष्यका एकत्र अवस्थानहै ताकानाम समासहै ॥ तासमासविषे तिन सर्वोंनैं जितनाकीअर्थ निर्णयकऱ्याहै तासर्वअर्थकानाम सामासिकहै ॥ तिससर्वअर्थकेमध्यविषे द्वंद्व कहीये रहस्यअर्थ मैंहूं ॥ तहां (द्वंद्वंरहस्य) इससूत्रविषे शाब्दिकपुरुषोंनैं द्वंद्वशब्दकूं रहस्यअर्थकावाचक कह्याहै इति ॥ ३३ ॥ ❁ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) मृत्युःसर्वहरश्चाहमुद्भवश्चभविष्यताम् ॥ कीर्तिःश्रीर्वाक्चनारीणांस्मृतिर्मेधाधृतिःक्षमा ॥३४॥ मृत्युः । सर्वहरः । च । अहम् । उद्भवः । च । भविष्यतां । कीर्तिः । श्रीः । वाक् । च । नारीणां । स्मृतिः । मेधा । धृतिः । क्षमा ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हे अर्जुन तथा संहारकर्त्तावोंकेमध्यमै सर्वकासंहारकरणेहारा मृत्यु मैंहुं तथा भावीकल्याणोंकेमध्यमै उत्कर्षरूपउद्भव मैंहुं तथा सर्व नारीयोंकेमध्यमैं कीर्ति श्री वाक् स्मृति मेधा धृति क्षमा यहधर्मकीसप्तपत्नियां मैंहुं ॥ ३४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसलोकविषेजितनैंकीसंहारकरणेहारेहैं ॥ तिनसर्वोंकेमध्यविषेसर्वजगत्कासंहारकरणेहारा जो मृत्युहै सोमृत्यु मैंहुं ॥ तथा होणेहारेजित नैंकीकल्याणहैं ॥ तिनसर्वकल्याणोंकेमध्यविषे जोऐश्वर्यकाउत्कर्षरूप उद्भवहै सोउद्भव मैंहुं तथा सर्वनारीयोंकेमध्यविषे धर्मकीपत्नियांरूप जेकीर्ति श्री वाक् स्मृति मेधा धृति क्षमा यहसप्तनारीयांहैं तेमैंहुं ॥ तहां इसपुरुषकाधर्मीपणाहैनिमित्तजिसविषे ऐसीजा प्रसिद्धपणेकरिकैं च्यारोंदिशावोंविषेस्थितअनेकदे शोंमैंरहणेहारेलोकोंकेज्ञानकीविषयतारूप प्रख्यातिहै ताकानाम कीर्तिहै ॥ और धर्म अर्थ काम इनतीनोंकानाम श्रीहै ॥ अथवा शरीरकीशोभाकानाम श्रीहै ॥ अथवा उज्ज्वलकांतिकानाम श्रीहै ॥ और सर्वअर्थकूं प्रकाशकरणेहारी जासंस्कृतवाणीरूप सरस्वतीहै ताकानाम वाक्है ॥ और पूर्वअनुभवकऱ्येहुएअर्थकी जाबहुतकालकेपीछेभी स्मरणकरणेकीशक्तिहै ताकानाम स्मृतिहै ॥ और अनेकग्रंथोंकेअर्थधारणकरणेकीजाशक्तिहै ताकानाम मेधाहै ॥ और अनेकप्रकारकी पीडाकेप्राप्तहुएभी शरीरइंद्रियरूपसंघातकेस्थिरताकरणेकीजाशक्तिहै ताकानाम धृतिहै ॥ अथवा यथाइच्छापूर्वक प्रवृत्तिकरावणेहारेकारणकरिकै चपलताकेप्राप्त हुएभी तिसप्रवृत्तिर्तैनिवृत्तकरणेकी जाशक्तिहै ताकानाम धृतिहै ॥ और हर्षविषाद दोनोंविषे जाचित्तकीअविकारताहै ताकानाम क्षमाहै इति ॥ जिनकीर्तिआदि कसप्तनारीयोंकेआभासमात्रकेसंबंधकरिकैभी यहजन सर्वलोकोंकरिकै आदरकरणेयोग्यहोवैहैं ॥ ऐसीकीर्तिआदिकसप्त नारीयोंकूं सर्वनारीयोंतैंउत्तमपणा अतिप्रसिद्धहीहै ॥ इति ॥ ३४ ॥ ❁ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) बृहत्सामतथासाम्नांगायत्रीछंदसामहम् ॥ मासानांमार्गशीर्षोहमृतूनांकुसुमाकरः॥३५॥ बृहत्साम । तथा । साम्नां । गाय त्री । छंदसाम् । अहं । मासानां । मार्गशीर्षः । अहम् । ऋतूनाम् । कुसुमाकरः॥३५॥(इतिपदच्छेदः)॥हेअर्जुन गीतिविशेषरूपसामों केमध्यमै बृहत्साम मैंहूं तथा छंदोंकेमध्यमै गायत्रीछंद मैंहूं तथा मासोंकेमध्यमें मार्गशीर्षमास मैंहूं तथा ऋतुवोंकेमध्यमै वसंतऋतु मैंहूं ॥ ३५ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ऋगादिकच्यारिवेदोंकेमध्यविषे सामवेद मैंहूं याप्रकारकेवचनकरिकै सामवेदकीउत्कृष्टता पूर्वहमनैं कथनकरीथी ॥ तिससामवेदविषेभी यहअ न्यविशेषताहै ॥ ऋचावोंकेअक्षरोंविषेआरूढ जे गीतिविशेषरूपसामहैं ॥ तिनसर्वसामोंकेमध्यविषे (त्वामिद्धिहवामहे) इसऋचाविषेस्थित गीतिविशेषरूप तथा सर्वकाईश्वररूपकरिकैइंद्रकीस्तुतिरूपक जो बृहत्सामहै सोबृहत्साम मैंहूं ॥ और नियमपूर्वकहैंअक्षर तथापाद जिसके ताकानामछंदहै ॥ ऐसेछंदभावकरिकैविशि ष्टजेवेदकीऋचाहैं ॥ तिनसर्वछंदोंकेमध्यविषे द्विजपणेकासंपादक जा चतुर्विंशतिअक्षरोंवाली गायत्रीहै जागायत्री (गायत्रीवाइदंसर्वंभूतम्)इत्यादिकश्रुतियोंकरिकै प्रतिपादितहै ऐसागायत्रीनामाछंद मैंहूं ॥ तथा द्वादशमासोंकेमध्यविषे अत्यंतशीतआतपतैंरहितहोणेतैं सुखकाहेतु जोमार्गशीर्षमासहै सोमार्गशीर्षमास मैंहूं ॥ तथा षट्ऋतुवोंकेमध्यविषे सर्वसुगंधिवालेपुष्पोंकाआकारहोणेतैं अत्यंतरमणीक तथा (वसंतेब्राह्मणमुपनयीत वसंतेब्राह्मणोऽग्नीनादधीत वसंतेज्योतिषायजेत) इत्यादिक श्रुतियोंकरिकैप्रसिद्ध जोवसंतऋतुहै सोवसंतऋतु मैंहूं इति ॥ ३५ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो ०) द्यूतंछलयतामस्मितेजस्तेजस्विनामहम् ॥ जयोस्मिव्यवसायोस्मिसत्त्वंसत्ववतामहम् ॥ ३६ ॥ द्यूतं। छलयताम्। अस्मि । तेजः । तेजस्विनाम् । अहं । जयः । अस्मि । व्यवसायः । अस्मि। सत्त्वं । सत्त्ववताम्। अहम् ॥ ३६ ॥(इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन छलकरणेहारेपुरुषोंका जूवारूपछल मैंहूं तथा तेजस्वीपुरुषोंका तेज मैंहूं तथाजयकरणेहारेपुरुषोंका जय मैंहूं तथाव्य वसायवालेपुरुषोंका व्यवसाय मैं हूं तथा सत्त्ववालेपुरुषोंका सत्व मै हूं ॥ ३६ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन परकावंचनरूपछलकेकरणेहारेजेधूर्त्तपुरुषहैं ॥ तिनछलवालेपुरुषोंका जो जूवारूपछलहैं जोजूवारूपछलसर्वस्वहरणकरणेकाकारणहै सोजूवारूपछल मैंहूं ॥ तथा अत्यंतउग्रप्रभाववालेजेतेजस्वीपुरुषहैं ॥ तिनतेजस्वीपुरुषोंका जोअप्रतिहतआज्ञारूपतेजहै सोतेज मैंहूं ॥ तथा जयकरणेहारेपुरुषोंका जो पराजयहुएपुरुषोंकीअपेक्षाकरिकै उत्कृष्टतारूपजयहै सोजय मैंहूं ॥ तथा व्यवसायवालेपुरुषोंका जो नियमतैंफलकीप्राप्तिकरणेहारा उद्यमरूपव्यवसायहै सो

न्यवसाय मैंहूं ॥ तथा सात्विकपुरुषोंका जो धर्मज्ञानवैराग्यऐश्वर्यतारूपसत्वहै ॥ अर्थात् सत्वगुणकाकार्यहै सोसत्व मैंहूं इति ॥ ३६ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) वृष्णीनांवासुदेवोस्मिपांडवानांधनंजयः ॥ मुनीनामप्यहंव्यासःकवीनामुशनाकविः ॥ ३७ ॥ वृष्णीनाम् । वासुदेवः । अस्मि । पांडवानाम् । धनंजयः । मुनीनाम् । अपि । अहम् । व्यासः । कवीनाम् । उशनाकविः ॥ ३७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन यादवोंकेमध्यमें वसुदेवकापुत्रकृष्ण मैंहूं तथा पांडवोंकेमध्यमें धनंजय मैंहूं तथा मुनियोंकेमध्यमें व्याससमुनि मैंहूं तथा कवियोंकेमध्यमें शुक्रकवि मैंहूं ॥ ३७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वयादवोंकेमध्यविषे वसुदेवकापुत्ररूपकरिकैप्रसिद्ध तथातुमारेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणेहारा यहकृष्णमैंहूं ॥ तथा सर्वपांडवोंकेमध्यविषे धनंजयनामाजोतूंअर्जुनहै सोमैंहूं ॥ तथा मननशीलमुनियोंकेमध्यविषे श्रीव्याससमुनि मैंहूं ॥ तथा सूक्ष्मअर्थकेविवेककरणेहारेकवियोंकेमध्यविषे शुक्रनामाकवि मैंहूं इति ॥ ३७ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) दंडोदमयतामस्मिनीतिरस्मिजिगीषताम् ॥ मौनंचैवास्मिगुह्यानांज्ञानंज्ञानवतामहम् ॥ ३८ ॥ दंडः । दमयताम् । अस्मि । नीतिः । अस्मि । जिगीषतां । मौनम् । चं । एव । अस्मि । गुह्यानां । ज्ञानम् । ज्ञानवताम् । अहम् ॥ ३८ ॥ (इतिप०) ॥

हेअर्जुन शिक्षाकरणेहारेपुरुषोंका दंड मैंहूं तथा जीतणेकीइच्छावालेपुरुषोंका न्यायरूपनीति मैंहूं तथा गुह्यअर्थोंका मौन मैंहूं तथा ज्ञानवालेपुरुषोंका ज्ञान मैंहूं ॥ ३८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अशिक्षितदुष्टपुरुषोंकूं कुमार्गतैंनिवृत्तकरिकै सुमार्गविषे प्रवृत्तकरणेहारे जेराजादिकपुरुषहैं ॥ तिनराजादिकोंका जो दुष्टपुरुषोंकूं तिसकुमार्गतैं निवृत्तकरणेकाहेतुरूपदंडहै सोदंड मैंहूं ॥ तथा जीतणेकीइच्छावान्पुरुषोंका जो जयकेउपायकाप्रकाशक न्यायरूपनीतिहै सानीति मैंहूं ॥ तथा गुह्यअर्थोंकेगोप राखणेकाहेतुरूप जो वाक्इंद्रियकानिग्रहरूपमौनहै ॥ सोमौन मैंहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोपुरुष वाक्इंद्रियकानिग्रहकरिकै तूष्णींस्थितहोवैहै ॥ तिसपुरुषकेअंतरके अभिप्रायकूं कोईभीजानिसकतानहीं ॥ यातैं सोवाणीकानिग्रहरूपमौन अर्थकेगोपराखणेकाहेतुहै इति ॥ अथवा इसका यहअर्थकरणा ॥ गोप्यपदार्थोंकेमध्यविषे संन्याससहित श्रवणमननपूर्वक जो आत्माकानिदिध्यासनरूपमौनहै सोमौन मैंहूं ॥ तथा ज्ञानवाले सर्वज्ञानीपुरुषोंका जो वेदांतशास्त्रकेश्रवणमनननिदिध्यासनकरिकै जन्य तथासर्वअज्ञानकाविरोधी मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारका आत्मज्ञानहै सोआत्मज्ञानमैंहूं इति ॥ ३८ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) यच्चापिसर्वभूतानांबीजंतदहमर्जुन ॥ नतदस्तिविनायत्स्यान्मयाभूतंचराचरम् ॥ ३९ ॥ यत् । च । अपि । सर्वभूतानाम् । बीजम् । तत् । अहम् । अर्जुन । न । तत् । अस्ति । विना । यत् । स्यात् । मया । भूतम् । चराचरम् ॥३९॥ (इतिप०)॥ हेअर्जुन तथा जोचेतन इनसर्वभूतोंका कारणहै सोकारण भी मैंहींहूं मैंपरमेश्वरतैं विना जो चर अचररूप वस्तु होवै सोवस्तु नहीं है ॥ ३९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसे प्रसिद्धवृक्षोंकेप्ररोहकाकारण बीजहोवैहै॥ तैसे इनसर्वभूतोंकेप्ररोहकाकारणरूप जोमायाउपहितचेतनरूप बीजहैं सोबीजरूपकारणभी मैं हींहूं ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरतैंविना जोकोई चरअचररूपवस्तुविद्यमानहोवै सोऐसाकोईवस्तु हैनहीं ॥ किंतु तेसर्वभूत मैंबीजरूपपरमेश्वरकाकार्यहोणेतैं मैंसत्तास्फुरणरूपपरमेश्वरकरिकैहीं व्याप्तहैं इति ॥ ३९ ॥ ❁ ॥ अब इसविभूतिप्रकरणकेअर्थका उपसंहारकरताहुआ श्रीभगवान्‌तिसविभूतिकूं संक्षेपतैं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) नांतोस्तिममदिव्यानांविभूतीनांपरंतप ॥ एषतूद्देशतःप्रोक्तोविभूतेर्विस्तरोमया ॥ ४० ॥ न । अंतः । अस्ति । मम । दिव्यानाम् । विभूतीनाम् । परंतप । एषः । तु । उद्देशतः । प्रोक्तः । विभूतेः । विस्तरः । मया ॥ ४० ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन मैंपरमेश्वरके दिव्य विभूतियोंका कोईअंत नहीं है । और यहजो हमनैं तुमारेप्रति विभूतिका विस्तार कथनकर्‍याहै सो एकदेशकरिकै कथनकर्‍याहै ॥ ४० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेपरंतप अर्थात् हेकामक्रोधादिकशत्रुवोंकूंतापकरणेहारा अर्जुन मैंपरमेश्वरका तिनदिव्यविभूतियोंका कोईअंत नहींहै अर्थात् तेसर्वविभूतियां इतनीयाहैं याप्रकारकीसंख्या तिनविभूतियोंकीनहींहै ॥ यातैं सर्वज्ञपुरुषोंनैंभी साहमारेविभूतियोंकीसंख्या जानणेकूं वाकहणेकूं समर्थनहींहोईता ॥ शंका ॥ हेभगवन् जबी सर्वज्ञपुरुषभी तिनविभूतियोंकेकहणेकूंसमर्थनहींहै ॥ तबी (आदित्यानामहंविष्णुः) इत्यादिकवचनोंकरिकै ते आपणीविभूतियां आप कैसे कहतेभयेहो ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्‌कहेहै (एषतुइति) हेअर्जुन यहजोहमनैं तुमारेप्रति आपणीविभूतिकाविस्तार कथनकर्‍याहै ॥ सोभी किसीएकदेशकरिकै कथनकर्‍याहै इति ॥ ४० ॥ ❁ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) यद्यद्विभूतिमत्सत्वंश्रीमदूर्जितमेववा ॥ तत्तदेवावगच्छत्वंममतेजोंशसंभवम् ॥ ४१ ॥ यद् । यत् । विभूतिमत् । सत्वम् । श्रीमत् । ऊर्जितम् । एव । वा । तत् तत् । एव । अवगच्छ । त्वम् । मम तेजोंऽशसंभवम् ॥ ४१ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥